ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

वैशाख २०७८ मई २०२१

₹२०

कविता

मीठे आम

– डॉ. चक्रधर नलिन

सुन्दर, सुन्दर मीठे आम
अच्छे, अच्छे, प्यारे आम
नहीं आम–सा कोई फल
खाओ इन्हें न छोड़ो कल
पके, गले, मुस्काते आम
मिलते ढ़ेरों सस्ते आम
लगड़ा, सेंदुरिया–मद्रासी
बम्बइया, तुकमी, बनारसी
रस से भरे दशहरी आम
खाओ अभी छोड़ सब काम
बुला रहे आमों के बाग
बीने इनको तड़के जाग

महकें बहुत सफेद आम
बच्चे देख रहे जी थाम
कोयल कूके अम्बुआ डाल
आम तोड़कर धर दें पाल
खाते नित जो प्यारे आम
वे पाते फल चारों धाम
कौन नहीं जो खाता आम
किसे नहीं है भाता आम
तृप्ति और सुख मिले तमाम
तेरे सुने हजारों नाम
सुन्दर, सुन्दर मीठे आम
अच्छे, अच्छे प्यारे आम

– लखनऊ (उ. प्र.)

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

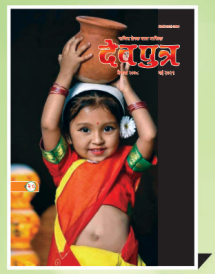

वैशाख २०७८ ▪ वर्ष ४१
मई २०२१ ▪ अंक ११

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फड़के

मानद संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	२० रुपये
वार्षिक	:	१८० रुपये
त्रैवार्षिक	:	५०० रुपये
पंचवार्षिक	:	७५० रुपये
आजीवन	:	१४०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१३० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया–बहिनो!

जिन्हें जीवन में कुछ बड़ा काम करना होता है वे कठिनाइयों का रोना रोते नहीं बैठे रहते। आज जिनका प्रसंग बता रहा हूँ वैसे तो उनके जीवन में ऐसे कई प्रसंग हैं पर यह एक प्रसंग भी इस उक्ति को समझने हेतु पर्याप्त है।

बात १९६१ की है। उन्हें अपने शोधपत्र के माध्यम से भारतीय शोध–दृष्टि से विश्व को परिचित कराने विदेश आमंत्रित किया गया था। टिकिट एक ट्रस्ट ने और शेष थोड़े बहुत खर्च की व्यवस्था उनके विश्वविद्यालय के चौकीदार ने अपने पास वर्षों से रखा सोना देकर की थी। कहते हैं **'आपत्तियाँ वीरों की परीक्षा लेती हैं।'** विदेश पहुँचे तो जेब में शेष थे मात्र चार पौण्ड। वैसे गृहस्थ होकर भी उनके साधु जैसे सरल जीवन की आवश्यकताएँ भी न्यूनतम थीं पर संकट तब उत्पन्न हुआ जब आयोजकों में से कोई उन्हें लेने न आया और सेमिनार जिस देश के जिस नगर में था वहाँ पहुँचने का वीसा (पार पत्र) ही १२ पौण्ड में बनता था।

पहले से तो उन्हें वहाँ एक चिड़िया का बच्चा भी न जानता होगा। दिनभर एक बगीचे में कटा, शाम ढलते वह भी बंद। रात को फुटपाथ पर पुलिस ने न सोने दिया। एक–दो नहीं, तीन दिन फुटपाथ पर बैठे–बैठे काटे, पर निराश होना या हारना उनने सीखा ही न था। अपने कागज पेंसिल निकाले और कुछ रेखाचित्र बनाकर उसी फुटपाथ पर बेच दिए। ऐसे तीन–चार पौण्ड और जमा हुए पर समस्या तो अब भी थी ही।

चौथे दिन एक महिला उन भारतीय शिल्प के चित्रों को देख प्रभावित हुई। चित्रकार से पूछा तो उसने बताया– ''चित्र बेचना उसका धंधा नहीं है अभी की विवशता है।'' महिला और प्रभावित हुई। पूरी बात सुनते–सुनते उसकी आँखें झर–झर झरने लगी। क्षमा माँगते हुए बोली– ''मैं ही हूँ उस आयोजन की अध्यक्ष। आपको जिन्होंने बुलाया है वे हमारे पूर्व अध्यक्ष अब संसार में नहीं रहे। मैं आपको तीन दिनों से खोज रही थी पर...।'' आगे के शब्द सिसकियों में दब गए। चित्रकार को तो कोई शिकायत थी ही नहीं तो क्षमा किस बात की करते।

वे महापुरुष थे कला एवं पुरातत्व के महान शोधकर्ता, संस्कृतिविद् पद्मश्री **श्री विष्णु श्रीधर वाकणकर**। वे भारत माता के हृदय मध्यप्रदेश के नीमच में जन्में पर अपना साधना केन्द्र बनाया उज्जैन को। वैदिक सरस्वती नदी, भीम बैठका के शैलचित्र सहित अनेक विश्वस्तरीय खोजों से भारतमाता का गौरव बढ़ाने वाले इन महापुरुष का जन्म हुआ था इसी माह अर्थात् ४ मई को १९१९ में। जिनने प्रेरणा दी कि–

जिनका जीवन ध्येय अटल है, उन्हें रोक ले किसका बल है।
सब बाधाएँ उससे बोनी, निश्चय बस बढ़ना प्रतिपल है।।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

।। अनुक्रमणिका ।।

कहानी

- मिट्टी का ढेला और पत्ता -राजा चौरसिया ०५
- नाना का घर -डॉ. शिवभूषण त्रिपाठी ०८
- कोयल का घमण्ड -ज्योत्सना सिंह १०
- भंगार से शृंगार -रोचिका शर्मा १३
- सीख -जयामोहन २६
- लू की आत्मकथा -ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश' २८
- चाँद का मुहँ टेढ़ा -कुँवर प्रेमिल ३२
- नई दिशा -सुमन वाजपेयी ४४

प्रेरक प्रसंग

- माँ - निशा सहगल १७
- अपमान सहन नहीं करूँगा -वासुदेव मुले २४
- सबसे बड़ा अपराध -नितेश नागोता जैन ३७
- पत्र का प्रभाव -श्यामसुन्दर गर्ग ३८
- प्रकाश यहाँ है -सुभाष बुड़ावनवाला ४१

आलेख

- रवीन्द्रनाथ की बाल्यावस्था - बादल कुमार बनर्जी १८

कविता

- मीठे आम -डॉ. चक्रधर नलिन ०२
- ए.सी. घर -डॉ. ब्रजनंदन शर्मा ०७
- अमलताश फूले -डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ ३१
- नहीं देखती जो सपनों को -डॉ. गोपाल राजगोपाल ३५
- प्यारा मटका -अखिलेश जोशी ४१
- यशोदा सी लगती है दादी -नरेन्द्र मण्डलोई ५१

लघुनाटिका

- विजयी भव -रूपाली सक्सेना १५

बाल प्रस्तुति

- चींटियों का सबक - अलीशा सक्सेना ३४

स्तंभ

- यह देश है वीर जवानों का १४
- संस्कृति प्रश्नमाला १४
- विषय एक कल्पना अनेक : गर्मी
  - गर्मी का गुस्सा तो देखें - सुरेन्द्र अंचल २२
  - गर्मी - डॉ. जगदीशशरण बिलगइयाँ 'मधुप' २२
  - सूरज दादा - गिरीशदत्त शर्मा २३
- स्वयं बनें वैज्ञानिक - प्रो. राजीव तांबे - सुरेश कुलकर्णी ३०
- आपकी पाती ३१
- आओ ऐसे बनें -मदनगोपाल सिंहल ३५
- पुस्तक परिचय ४२
- छ: अंगुल मुस्कान ४३
- बड़े लोगों के हास्य प्रसंग ४६

चित्रकथा

- सात हजार में - संकेत गोस्वामी १२
- आसान काम - देवांशु वत्स २१
- वादे का वादा - देवांशु वत्स ३९

जानकारी

- दिखावे के दाँत - अंकुश्री ४६
- प्रकृति के मित्र कीड़े मकोड़े - संकेत गोस्वामी ४७
- आखिर क्यों होता शार्ट सर्किट - डॉ. विभा खरे ४८

छोटी कहानी

- पिंजरा खिड़की और गौरैया -दिनेश दर्पण २९
- लालची गधा -कुमुद कुमार ३६
- मिठास -सुधा भार्गव ४०
- प्रतिभा का सम्मान -शिवमोहन यादव ४९

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - "**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**" आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

कहानी

मिट्टी का ढेला और पत्ता

– राजा चौरसिया

गोपाल अपने गाँव में बरगद जैसे सयाने लोगों से कहानियाँ सुनने का बहुत ही लगाव रखता था। इस कारण उसका हमेशा उत्साहित रहना स्वाभाविक था। दादा–दादी से लेकर नाना–नानी तक से सुनी गई कहानियों की यादें अपने मन में ऐसे सँजोकर रखता जैसे कभी बच्चे शाला की किताबों में मोरपंख सँजोकर रखते थे।

बचपन में ही वह समझ गया था कि सीखने के लिए यहाँ–वहाँ जाने की आवश्यकता नहीं है। नन्हें से बीज के पेट में छिपे झाड़, के समान कहानियों के अंदर ज्ञान की खान है।

संयोग से गोपाल के लँगोटिया साथियों को भी चिरैयों, पशुओं तथा फूल–पत्ते आदि से जुड़ी कहानियों के प्रति बड़ी दिलचस्पी थी।

एक दिन गोपाल के घर के गोबर–लिपे आँगन में वह बाल मंडली साँझ की वेला में बैठी हुई देखकर गोपाल परछी से दौड़कर आ गया। वह चट से ताड़ चुका था कि इन्हें कहानियाँ सुनने की प्यास कुछ अधिक है।

''मैं आज नहीं, कल सुनाऊँगा।'' उनकी

लालसा को और अधिक बढ़ाने की गरज से यह कहकर गोपाल ने चुप्पी साथ ली। ''नहीं जी! हम लोग आज ही अभी सुनेंगे। रविवार की इस छुट्टी के मजे का कोटा पूरा करना है।'' लगन की इस बात पर सभी ने भरपूर सहमति जताई।

गोपाल यह अच्छी प्रकार जान गया कि अब गरम हो चुके तवे पर रोटियाँ सेंकना ही बढ़िया है।

''हाँ तो शुरू कर रहा हूँ।''

''लेकिन आज ऐसी कहानी सुनाओ, जिसमें संकट के समय एक-दूजे के काम आने की शिक्षा हो और वह पुरानी होकर भी नई लगे।'' सूरज ने कहा।

अब क्या था! सब मित्रों की इस प्रकार की इच्छा जानकर गोपाल ने पुलकित होकर गाड़ी आगे बढ़ाई।

''मुझे अचानक एक कथा अर्थात कहानी याद आई जो मेरी दादी ने कभी सुनाई थी। बरसात की शुरूआत होने वाली थी। आकाश में बादल तो खूब घुमड़ रहे थे किन्तु बरस नहीं रहे थे। हवा का तेज अंधड़, अपने प्रकोप का चहुँओर प्रदर्शन करने पर उतारू था। झाड़ों और झाड़ियों को झकझोरने की उसकी तो प्रवृत्ति ही थी। गाँव के बाहर खुले मैदान में डालियों सहित ढेर सारे पत्ते झड़कर बिछ गए थे। वहीं मिट्टी का एक बड़ा ढेला पड़ा हुआ था। वह सब कुछ हैरान होकर देख रहा था।''

बगुले जैसे श्रोता मित्रों को ध्यानमग्न देखकर गोपाल का साहस बढ़ गया था- ''हाँ, तो इतने में पलाश का टूटकर गिरा एक बड़ा पत्ता हवा की मार सहता हुआ ढेले के पास आया। उसे काफी परेशान समझकर तथा द्रवित होकर ढेला सहजता से आग्रह करते हुए बोला- ''भाई! मेरे रहते चिंता मत करो। मुझसे भटकने से बच जाओ।'' पत्ते के निकट आते ही ढेले ने उसे तुरंत अपने तले दबा लिया। बेचारा पत्ता सहारा पाकर बड़ी राहत अनुभव करने लगा। कुछ देर बाद अंधड़ थमते ही ढेले ने उसे छोड़ दिया।

''तुमने मुसीबत में मुझ पर जो कृपा दिखाई, मैं उसका उपकार कभी नहीं भूल सकता।''

''अरे! इसमें भला काहे का उपकार! मैं इस माटी का बेटा हूँ और तुम भी माटी से पैदा हुए पेड़ के बेटे हो। हम दोनों सगे भाई हैं।''

पलाश पत्ता धीरे-धीरे सरकता हुआ आसपास चला गया। दो-तीन दिन बाद मौसम ने करवट बदली तो बादल और अधिक घने होकर बरसने पर उतर आए। ज्यों ही खूब बूँदाबाँदी होने लगी त्यों ही ढेला डर के मारे थरथराने सा लगा- ''अगर पानी एकदम से बरसा तो मैं पूरी तरह घुल जाऊँगा। मैं कोई अधिक पुराना और मजबूत भी नहीं हूँ। हे भगवान! अब कैसे बचे जान! बादलों के गर्जन से मेरी साँसें फूल रही हैं।''

अचानक उसी अवसर पर वही पलाश का पत्ता रेंगता हुआ ढेले के पास आकर उसके ऊपर छत्ते की तरह तन गया। पानी तेजी से गिरने लगा मगर सहमे हुए ढेले को अब रक्षा-कवच मिल चुका था। वह तो यह आभास कर चुका था कि मुसीबत से बचाने मेरा वही भाई आया है।

पानी थमते ही पत्ता जब जाने लगा तब ढेला भावुक होकर कहने लगा- ''तुमने मुझे बचा लिया। मैं आभारी रहूँगा।''

''इसमें काहे का आभार, यदि अवसर पर भाई काम नहीं आएगा तो वह भाई कैसे कहलाएगा।'' मैं पूरी बरसात तक सूख नहीं सकता हूँ। इसी तरह आता रहूँगा। एक-दूसरे के काम आने में असली खुशी है। समय पर किसी को भी अपना भाई बनाना चाहिए।

आत्मा को सीधे छूकर भावविभोर करने वाली यह शिक्षाप्रद कहानी सुनकर सभी बाल श्रोताओं की ओर से मिले भरपूर धन्यवाद से गोपाल खुशी से फूला नहीं समा रहा था।

- उमरियापान (म. प्र.)

ए. सी. घर

– डॉ. ब्रजनन्दन वर्मा

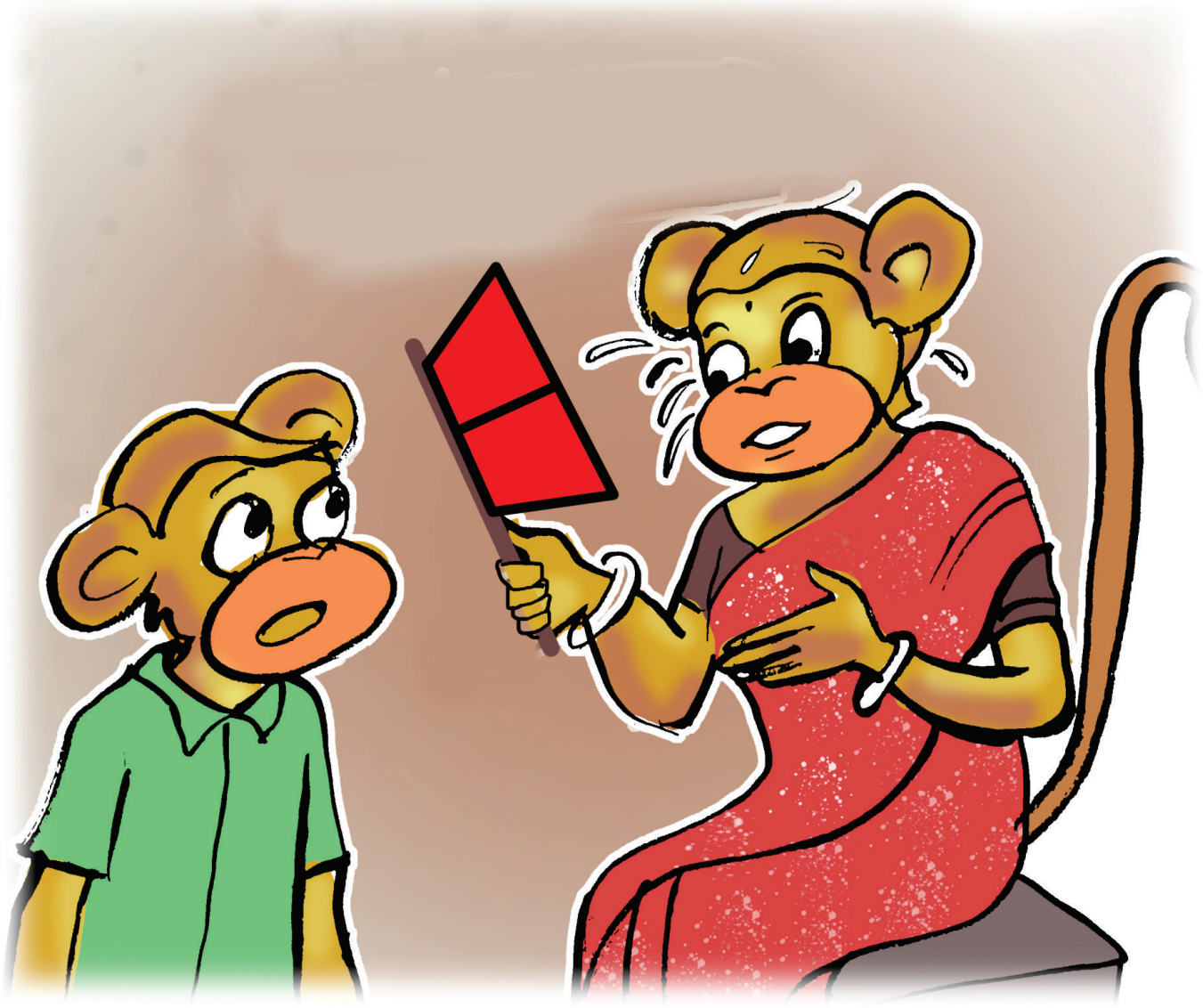

बन्दरिया बन्दर से बोली,
कैसी गरमी आई।
सिर से गर–गर गिरे पसीना,
हालत बुरी बनाई।।

ओठ हमारे सूख रहे हैं,
आईसक्रीम मंगवालो।
घर के अन्दर जल्दी से,
ए. सी. एक लगवाओ।।

बन्दर बोला बन्दरिया से,
एक बात मेरी भी सुन लो।
घर की हालत ठण्डे मन से,
मन ही मन में गुन लो।।

जल्दी अगर पड़ी है तुमको,
मैहर से मंगवालो।
नहीं तो ताड़ वाली पंखा से,
यह भी साल बिता लो।।

– मुजफ्फरपुर (बिहार)

नाना का घर

– डॉ. शिवभूषण त्रिपाठी

गर्मी के दिन थे। सभी विद्यालय बंद हो गए थे। छुट्टियाँ ही छुट्टियाँ थी प्रतिदिन विद्यालय आने जाने से फुरसत मिल गयी थी। सोच रहा था कि छुट्टियों में खूब मस्ती करूँगा, पर ऐसा नहीं हुआ। घर से बाहर निकलना भी कठिन हो गया था। दिनभर घर में समय बिताना भी कठिन हो रहा था। घर में न तो कोई मनोरंजन था और न खेलने वाले दो–चार साथी ही थे। पढ़ना–लिखना भी कितनी देर करते। खाली बैठे भी बहुत देर तक नहीं रह सकते।

छोटी बहिन राधा के साथ भी अधिक समय तक कोई खेल नहीं खेलते बनता था। वह भी मेरे साथ खेलना नहीं चाहती थी। दोनों की रुचियाँ भिन्न थीं। माता–पिता को भी मेरे साथ समय बिताने का अवसर कहाँ था। हर–बार छुट्टियों में कहीं घूमने आने–जाने का कार्यक्रम बनता पर पिताजी को छुट्टी ही नहीं मिलती। हम बच्चों के लिए किसी को कोई चिंता न थी, ऊपर से यह न करो, वह न करो इस तरह पाबन्दियाँ ही पाबन्दियाँ थीं।

कभी कोई कार्य हम आँख बचाकर करते, कोई गलती अथवा टूट–फूट हो जाती तो फिर सब लोग आसमान सिर पर उठा लेते, डाँटते–मारते। हम भी थोड़ी देर रोकर, मन मसोसकर चुप हो जाते और कभी माँ की डाँट सुनकर पिता के पास और कभी पिता से डाँटे जाने पर माँ के पास दौड़ते। इस तरह कभी कहीं बचाव न होने पर सीधे दादी माँ की शरण में जाते। दादी माँ कभी कुछ नहीं कहती। उनका पूरा प्यार हम दोनों को मिलता। घर में कितनी भी बहुमूल्य वस्तु हमसे टूट जाए, चाहे वह दादी का चश्मा ही क्यों न हो ? पर दादी कभी गुस्सा नहीं करती प्रेम से समझा दिया करती थीं। आज बड़े होने पर दादी की बहुत सारी यादें मेरे पास हैं उनकी प्रेरणाएँ, उनके द्वारा दिए गए संस्कार और शिक्षाएँ हमें कठिन से कठिन अवसरों पर सफलता दिलाती रहीं हैं। दादी से सुनी हुई कहानियाँ मुझे याद हैं। बचपन में उनकी कुछ बातों का अर्थ समझ में नहीं आता था फिर भी सुनने में अच्छी लगती थीं और मैं सुनता रहता था बाद में उन बातों का अर्थ अपने आप समझ में न केवल आता गया बल्कि उनका लाभ भी मिलता रहा।

गर्मी की छुट्टियाँ बीत रहीं थीं। बाजार में पके आम बिकने लगे थे। इधर हम भी बड़ी उत्सुकता से बाट जोह रहे थे कि नानाजी आएँगे और प्रत्येक वर्षों की भाँति आम खाने के लिए अपने घर ले जाएँगे। नानाजी समय से आ गए। वह हम बच्चों के साथ अम्मा–बाबू को भी ले जाना चाहते थे, पर बाबू को तो कभी छुट्टी ही नहीं मिलती और अम्मा तो चाहकर भी दादी को छोड़ कर नहीं जा सकती थीं। हमें और राधा को नाना के साथ भेज दिया गया।

विद्यालय खुलने में अभी बीस दिन बचे थे। ननिहाल आकर इन बीस दिनों में हमने खूब मौज–मस्ती की। नानाजी के संयुक्त परिवार में सभी आयु वर्ग के बच्चे घर में थे। उनके साथ तरह–तरह के खेल खेलना, चुटकुले सुनना, सुनाना, पहेलियाँ बूझना–बुझाना इन सब में आराम से समय बीत जाता।

बाग में बैठकर देसी, कलमी सभी तरह के पके हुए आम खाने का स्वाद ही कुछ और होता था। घर की तरह हम नाना के घर पर भी शैतानी खूब करते थे पर यहाँ हमें

कोई झिड़कता नहीं था। यहाँ हम पूरे गाँव वालों के लिए मेहमान की तरह थे, शहर की अधिकांश बातें मित्रों को बताकर गौरव अनुभव करते। कुछ ही दिनों में वहाँ मेरे कई मित्र बन गए थे।

इधर नाना जी अपने घरेलू काम काज में व्यस्त रहते हुए भी हमारे लिए समय निकाल लेते। वे प्राय: कहा करते– ''हल से छूट कर कुदाल से विश्राम'' अर्थात– एक काम से थककर दूसरा काम करने से थकान दूर हो जाती है। इस तरह वे हरदम काम करते रहते थे। दोपहर के समय रस्सी बटते, रस्सी में तरह–तरह की गाँठें लगाते उन्हीं को देखकर मैं भी रस्सी बटना सीख गया था। गर्मियों में ही वे खेती किसानी के काम में आने वाले औजारों की मरम्मत साफ–सफाई भी किया करते जिसे देख–देखकर मैं भी उन औजारों से परिचित हो गया। घर के सामने पड़ी जमीन पर साग–सब्जी उगाना, बागवानी करना, लालगेरू मिट्टी से स्वास्तिक, पशु–पक्षियों के चित्र आदि बनाने में तो नानाजी सिद्धहस्त थे। पानी में तैरने की कला हमें नानाजी ने ही सिखाई थी। इसलिए तैराकी में पुरस्कार पाने का श्रेय मैं अपने नानाजी को ही देता हूँ, न केवल तैराकी अपितु कहानी लिखने–पढ़ने में रुचि भी नानाजी ने ही जगाई थी।

नानाजी से सुनी हुई एक कहानी आज भी मुझे याद है। ''एक बार मैदान से पहाड़ पर चढ़ने के लिए छोटे–बड़े जानवरों की प्रतियोगिता हुई।'' सभी जानवर सीटी की आवाज होते ही सबसे आगे पहुँचने के लिए चल पड़े। लोग अपने–अपने पशुओं को आगे बढ़ने के लिए उत्साहित करने लगे। दौड़ने वालों में कुछ मेंढक भला इतनी ऊँचाई पर कहाँ चढ़ पाएगा? असंभव, असम्भव है। ''बड़े जानवर तो समझते थे कि हम बड़े हैं। हमारे लिए तो पहाड़ की चोटी पर पहुँचना बड़ा आसान है, इसलिए आराम से चल रहे थे। छोटे जानवर जो तेज और फुर्तीले थे उन्हें लोगों ने यह कहकर कि भला इतनी कठिन चढ़ाई। ये कैसे चढ़ सकते हैं? नहीं चढ़ सकते, नहीं चढ़ सकते इस तरह हतोत्साहित करते रहे, फलस्वरूप वे हार मानकर बीच में ही रुक गए, वहीं उस दौड़ में एक नन्हा सा मेंढक चलता रहा, चलता रहा और अन्त में वह पहाड़ की चोटी पर था।

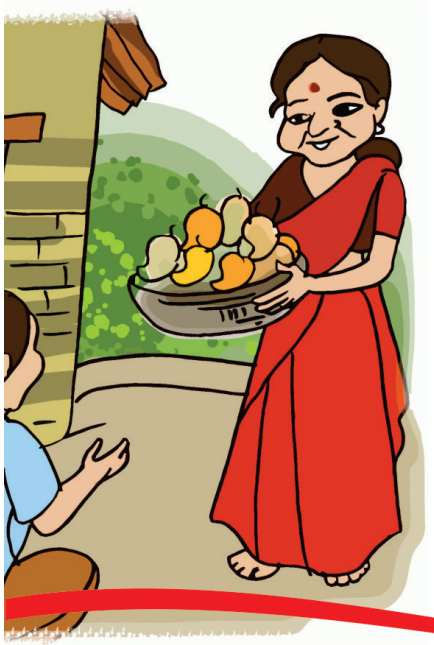

विजय श्री उस पिद्दी से मेंढक के हाथ लगी। इस पर लोगों को आश्चर्य हुआ। बाद में यह पता चला कि जीतने वाला मेंढक बहरा था। उसने किसी की कोई बात सुनी ही नहीं। वह तो केवल अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रहा था और विजयी हुआ।''

नानाजी से सुनी कहानी का ही प्रभाव रहा कि अनेक अवसरों पर जब लोग ईर्ष्या द्वेष के कारण मुझे सन्मार्ग से भटकाने का प्रयत्न करते और मैं बार–बार बचता रहा। बचपन में जो संस्कार उनके निकट रह कर पड़ा तथा जो सीख मुझे नानाजी से मिली वह आज भी बहुत उपयोगी सिद्ध हो रहा है।

हमनें कभी किसी काम को छोटा–बड़ा नहीं माना क्योंकि ''उद्योगे वसति लक्ष्मी:'' नानाजी की यह बात मेरे हृदय में अच्छी तरह से बैठ गयी थी और मैं छोटे–मोटे घरेलू उद्योग धंधों में लगा रहा। अनेक उतार–चढ़ाव आए पर मैं निराश नहीं हुआ। सफलता मिली। आज बड़े पैमाने पर रस्सी उद्योग हमारे हाथ में है। हम धन से सम्पन्न हैं। यद्यपि मेरे नानाजी आज जीवित नहीं हैं, पर कभी–कभी सोचता हूँ काश! नानाजी के परिवार की तरह आज लोग संयुक्त परिवार व्यवस्था में रहते तो शायद किसी आयुवर्ग के लोगों को कोई अकेलापन अनुभव नहीं होता।

– लखनऊ (उ. प्र.)

कोयल का घमण्ड

– ज्योत्सना सिंह

सनसनीखेज खबर फैल गई पूरे जंगल में। बात एक चोंच से होती हुई दूसरी फिर तीसरी चोंच से कुछ यूँ उड़ी कि हर एक के कानों से जा टकराई। बात भी कोई छोटी तो थी नहीं सबसे मीठी बोली की सुकुमारी सबकी दुलारी सुरीली कोयल को घमंड हो गया था। वह भी उसके सबसे प्यारे गुण उसकी मीठी बोली पर।

बात वैसे किसी को भी पता न चलती पर चिनमिन गौरैया से उसकी थोड़ी सी मुँहचावर क्या हुई कि चिनमिन ने रोते हुए भूरी कबूतरी को सब बता दिया– ''भूरी दीदी! तुम ही बताओ क्या मैं चिचियाती हूँ? सुरीली ने मुझे आज बहुत बुरा–भला कहा। एक बात बताऊँ दीदी! उसे न घमंड हो गया है। कृपया भूरी दीदी! आप किसी को कुछ मत कहना अब मैं उससे और नहीं लड़ना चाहती।'' भूरी ने उसकी चोंच को सहलाते हुए कहा– ''न, न मेरी प्यारी बहना! मैं किसी से कुछ नहीं कहूँगी।''

कबूतरी ठहरी छोटे से दिल की उससे चिनमिन का रोना देखा नहीं गया। वह हरीभाई तोतू के पास गई और सब कुछ कह सुनाया साथ ही साथ हरीभाई को बोल भी दिया कि– ''देखो मित्र! किसी के भी सामने अपनी चोंच न खोलना, चिनमिन को बुरा लगेगा। एक बात और भी है, हम दोनों की तो कोई लड़ाई है नहीं सुरीली से।'' तोतू ने भी जोर की रटन रटी– ''होने दो घमंड सुरीली को और लड़ने दो चिनमिन को हम न पड़ते किसी के झगड़े में।''

हरीभाई आखिर तो तोतू। एक बार में कहाँ चुप होने वाले वह रटने लगे बार–बार और उसकी रटन जा टकराई मीना मैना के कानों में। मैना बोली– ''मेरे हमदम मेरे दोस्त! तुम क्या मुझे भूल गए जो सुरीली और चिनमिन की माला जप रहे हो?'' हरीभाई तोतू नीना मैना के पास जा प्यार से बोले– ''अपनी कहानी तो जग जाहिर है प्यारी मैना! पर इन दोनों की जो बात मैं तुझे बता रहा हूँ वह तू किसी से न कहना।'' मीना ने कहा– ''लो सुनो लो भला, मैं क्या चुगलखोर हूँ? मैं किसी से कुछ नहीं कहती।''

लेकिन! बबली बुलबुल की चोंच जा टकराई मीना से और मीना की रसना ने स्वाद चख लिया चिट–चैट करने का। अब बबली का क्या वह तो ठहरी ही चुलबुली उसने खूब चटखारे लेकर सुनी पूरी बात और जा पहुँची पंछी पंचायत घर खींच दिया वहाँ का घंटा।

घंटा घनघनाया तो उस जंगल की पक्षी रानी मोरनी आकर बैठ गईं अपने सिंहासन पर। काले खाँ कौवा ने अपनी जिम्मेदारी पूरी की और सबको हाँक लगा दी। पलक झपकते सब पंख फड़फड़ाते हुए आ पहुँचे मयूर विहार पंचायत खंड पाँच में।

शरद खंजन सरकारी वकील ने अपना पद संभाला और मोरनी रानी को घटना का विवरण दिया–

''रानी मोरनी सतरंगी देवी की सदा ही जय हो। चिनमिन और सुरीली की आपस में है ठन गई, सुना रहा है, जंगल इन दोनों का दंगल। बात–वात कुछ खास नहीं फिर भी है कुछ झंझट। वादी चिनमिन हाजिर हो लेकर अपनी खटपट।''

चिनमिन गौरैया ने अपनी आँख मुलमलाई और रोते हुए कहा– ''मैं दाना चुगकर बोर हो गई थी इसीलिए सुरीली से बात करना चाह रही थी। सुरीली बोली, तुम अपना चिचियाना बंद करो मुझे तुमसे बात नहीं करनी। बताइए सतरंगी रानी जी क्या मैं चिचियाती हूँ?''

शरद खंजन ने कहा– ''आप की बात सुन ली गई है सतरंगी देवी न्याय करेंगी आप भरोसा रखिए

जंगल के नियम पर अभी प्रतिवादी सुरीली कोयल की भी बात सुनी जाएगी।'' सुरीली कोयल ने गर्दन को अकड़ाया और अपनी टाई नॉट को कसते हुए बोली– ''जंगल में होने वाली प्रतियोगिता के लिए मैं अपना नया राग तलाश रही थी उसी समय ये बेसुरी मुझे परेशान कर रही थी।''

चिनमिन चीख मार कर रो पड़ी– ''भरे दरबार में मेरा अपमान अब तो मैं जीवित रहने के लायक भी नहीं रही चीं चीं चीं चीं ऽऽऽऽ''

पूरी सभा में चिर–चूँ शुरू हो गई सुरीली कोयल ने अपना जूता खटकाया फिर थोड़ा और अकड़कर बोली– ''डिस्गास्टिंग।''

तभी सभी को चुप कराते हुए वकील शरद खंजन जी बोले– ''वादी और प्रतिवादी दोनों की बात रानी ने सुन ली है आप सब प्रतीक्षा करें, निर्णय आने को है।'' अब सब शांत थे सतरंगी रानी ने अपना निर्णय सुना दिया– ''यह सत्य है कि जब गौरैया बोलती है तब चिचियाती ही है। लेकिन उसको सभ्य समाज चहचहाहट कहता है। वह भी मधुर स्वर माना जाता है। किन्तु सुरीली कोयल की आवाज तो सुपर से भी ऊपर मानी जाती है। मानव समाज में तो इनके नाम की उपाधि भी दी जाती है। इसके लिए इन्हें कड़ा अभ्यास करना पड़ता है। यही कारण है कि सुरीली अपनी साधना में लगी हुई थी। वह चिनमिन की आवाज से परेशान हो गई, किन्तु इसका यह अर्थ बिल्कुल भी नहीं कि आप किसी का अपमान करें। आपका वहीं गुण अच्छा माना जाता है जिसमें विनम्रता भी हो। नहीं तो कोई कितना भी गुणवान हो उसकी प्रार्थना में कमी आ जाती है।

अब जब सुरीली को इतना घमंड हुआ है तब उसे इस बार की प्रतियोगिता में भाग नहीं लेने दिया जाएगा। एक बात और जंगल में घमंड किसी और को न होने पाए इसके लिए सुरीली को दण्ड मिलना भी आवश्यक है। इसलिए पिछले वर्ष का सुर साम्राज्ञी

वाला सम्मान सुरीली से लेकर चिनमिन को दिया जाता है ताकि उसका जो अपमान हुआ है उसकी भरपाई की जा सके।'' निर्णय देते ही सतरंगी ने अपने पंख समेटे और अपने आसन पर विराजमान हो गई।

सभी ने सतरंगी रानी की जय–जयकार की और जंगल के नियम के सम्मान में खड़े हो अपने पंखों से तेज फड़फड़ाहट की।

तभी चिनमिन ने अपनी आवाज बुलंद की और बोली–''रानी जी! रानी जी! आपका न्याय सर आँखों पर, लेकिन एक प्रार्थना है आपसे। आप सुरीली का सम्मान न छीनें मैं आपके न्याय से ही स्वयं को सम्मानित अनुभव कर रही हूँ। मैं उस सम्मान के योग्य नहीं हूँ। वह तो सुरीली के लिए ही बना है।''

सब चिनमिन के बड़े दिल की प्रशंसा करने लगे। सुरीली का घमंड टूट गया था। उसे अपनी त्रुटि का अनुभव हो गया था। उसने आगे बढ़कर चिनमिन को अपने गले लगाते हुए–''मुझे क्षमा कर दो।'' कहा। पंछी पंचायत में चिनमिन और सुरीली की खूब प्रशंसा हुई। और सभी पंक्षी अपने–अपने दाने की खोज में उड़ चले। उधर रानी मोरनी के न्याय को सुन पिकपाक मोर झूमकर नाच उठा।

– लखनऊ (उ. प्र.)

सात हजार में

चित्रकथा-

कहानी

भंगार से शृंगार

– रोचिका शर्मा

मोहल्ले के सारे बच्चे मिलकर उद्यान में खेलने जाया करते। उद्यान बहुत पुराना हो चुका था और उसके दरवाजे अब मरम्मत मांग रहे थे। आस–पास के कुत्ते और सुअर उसमें घुस जाया करते। सुअरों को गर्मी में पानी पड़ी हरी दूब खूब सुहाती और वहाँ अब गंदगी रहने लगी थी।

मोहल्ले के कुछ लोगों ने उद्यान के दरवाजे में तार बाँधकर जाल सा बंद दिया ताकि सुअर व कुत्ते उद्यान में ना घुस सकें। लेकिन जानवरों को तो अब उद्यान में घुसने की आदत सी पड़ चुकी थी। सो तार के बीच में मुँह घुसा कर उसमें जगह बनाने लगे। एक दो सुअर और कुत्ते तो उसमें सफल भी हो गए। वहीं एक छोटा पिल्ला था जो तार के बीच में से घुसने का प्रयत्न कर रहा था और उसमें फंस गया। वह जोर–जोर से चिल्लाने लगा। दूसरे कुत्ते उसके आस–पास जमा होकर भौंकने लगे। शायद वे समझ गए थे कि छोटा पिल्ला मुसीबत में है।

आवाजें सुनकर उद्यान में उपस्थित बच्चे भी वहाँ जमा हो गए। तभी रोहित ने देखा पिल्ले की गर्दन तार के बीच दबी है यदि अधिक दब गयी तो वह मर जाएगा। उसने अपने मित्र अमित से कहा कि वह एक हाथ से तार ऊपर को खींचे और स्वयं अपने हाथ से तार को नीचे खींचने लगा। इससे उसमें थोड़ी जगह बन गयी और पिल्ले की गर्दन आराम से बाहर आ गयी। पिल्ला अपने साथी कुत्तों के साथ मिलकर ठीक हो गया।

किन्तु अब चिंता का विषय यह था कि दरवाजे को ठीक न किया तो फिर से कोई जानवर उसमें से निकलने का प्रयत्न करेगा और हो सकता है फंस भी जाए।

तभी रोहित को याद आया कि उसके घर में

एक पुरानी चारपाई भंगार वाले को देने के लिए पड़ी है क्योंकि अब उसकी घर में आवश्यकता नहीं।

उसने झट से चारपाई से नायलोन की निवार निकाली और उद्यान के दरवाजे में लगाने लगा। उसे ऐसा करते देख उसके दूसरे मित्र भी सहायता के लिए आगे आ गए। एक घंटे के अन्दर दरवाजे के फ्रेम के बीच में निवार आड़ी–खड़ी बँध गयी थी।

शीना मोटी सुई और पतंग उड़ाने वाला मांझा लेकर आ गयी। उसने झट से निवार के सिरों को सुई से सिल दिया। जिससे निवार के बीच में कोई जगह नहीं रही जहाँ से जानवर अन्दर आ सकें। इस प्रकार से घर के पुराने सामान का उपयोग हुआ और उद्यान के दरवाजे की नि:शुल्क दुरुस्ती भी हो गयी।

अब बागीचे में कुत्ते व सुअर आना बंद हो गए। सभी बच्चों व उनके माता–पिता ने मिलकर उद्यान की सफाई करवाई और उसकी क्यारियों में नए पौधे भी लगा दिए। उद्यान की शोभा दूनी और बच्चों के लिए खेलने की जगह साफ–सुथरी हो गयी।

– चेन्नई (तमिलनाडू)

कैप्टन विक्रम बत्रा

६–७ जुलाई की वह रात। तोलोलिंग पहाड़ी पर अपने जवान शत्रुपक्ष से भिड़ते हुए इतने निकट आ चुके थे कि शस्त्रों, गोला बारूद से ही नहीं आपस में वाक्युद्ध भी छिड़ चुका था। पाकिस्तान को पीछे धकेलना और चौकी पर कब्जा करना अपरिहार्य था दुश्मन पाईंट ४८७५ के उत्तर में सँकरी पर लम्बी सी घाटी में था 'डी' कम्पनी जिसका नेतृत्व कर रहे थे कैप्टन विक्रम बत्रा को पाकिस्तानी घुसपैठियों को खदेड़ने का आदेश मिला।

१३ जम्मू व कश्मीर राइफल्स को १२ जून १९९९ को ही द्रास की ओर बढ़ने का आदेश मिला था जिन्हें १८ ग्रेनेडियर्स के रिजर्व के रूप में सहयोग करना था। जो तोलोलिंग की चोटी हंप पर कब्जा करने को उद्धत थी। १७ जून को भीषण संघर्ष करके लक्ष्य प्राप्त भी हो चुका था। दुश्मन के ८ सैनिक मारे गए ९ घायल हुए। इसी क्रम में अगला लक्ष्य था पाईंट ५१४०। यहाँ हमारा एक हेलिकॉप्टर दुश्मन ने गिरा दिया था और हमारा वायुमार्ग अवरुद्ध था। इस पर कब्जे का दायित्व था १३ जम्मू व कश्मीर राईफल्स की 'बी' व 'डी' कंपनी को जिनका नेतृत्व क्रमश: एस. एम. जामवाला व कैप्टन विक्रम बत्रा कर रहे थे। १९ जून १९९९ भोर होते–होते हम 'हंप' पर जम चुके थे। उसी मोरचे पर ६–७ जुलाई की उपरोक्त घटना थी।

७ जुलाई दुश्मन सैंगर ने हमारी बढ़त रोक दी। गोलीबारी व ग्रेनेडों की भारी वर्षा के बीच कैप्टन बत्रा ने स्थिति को बन्द कर दिया पतले रास्ते से जाकर ५ पाकिस्तानी ढ़ेर कर दिए पर बाकी दुश्मनों ने इस शेर की छाती पर वार किया गोलियों के साथ ग्रेनेड का टुकड़ा भी उनके वक्ष में धँस गया। सेना का यह वीर बलिदान हुआ पर भारतीय सेना ने अपना लक्ष्य प्राप्त कर लिया। दुश्मन से द्रास से मातायन तक राष्ट्रीय राजमार्ग मुक्त हुआ। परमवीर चक्र के सम्मान के योग्य तो कैप्टन हो ही गए थे।

–

संस्कृति प्रश्नमाला

- *रावण–पुत्र मेघनाद की माता कौन थी?*
- *युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में अग्रपूजा किनकी की गई थी?*
- *महर्षि अगस्त्य का सम्मान भारत से भी अधिक कहाँ किया जाता है?*
- *तुंगभद्रा नदी के किनारे पर किस नगर में चार में से एक शांकरमठ (पीठ) है?*
- *भारत के किस महाकवि को पूरे विश्व का अब तक का सर्वश्रेष्ठ कवि माना जाता है?*
- *शिवाजी के एक सहयोगी मुसलमान (कुली खाँ) बन गये थे। बाद में उनका शुद्धिकरण किसने करवाया?*
- *सिंधु घाटी से प्राप्त एक शिलालेख में सूर्य और पृथ्वी के व्यासों (डायमीटर) का अनुपात कितना बताया गया है?*
- *प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के बाद महाराष्ट्र में भारत की आजादी के लिए सशस्त्र संघर्ष किसने प्रारम्भ किया?*
- *पश्चिमी राजस्थान का कौन सा दुर्ग महाभारत काल का माना जाता है?*
- *अयोध्या में विवादित ढांचा (६ दिसम्बर १९९२) के मामलों में सभी आरोपियों को दोष मुक्त करने का निर्णय कितने वर्ष बाद आया है?*

(उत्तर इसी अंक में)

(साभार : पाथेय कण)

विजयी भव

– रूपाली सक्सेना

पात्र परिचय

(१) माँ, (२) गुनी, (३) चिनी।

दृश्य एक

(घर का दृश्य। समय सुबह ६:३० बजे। अलार्म की आवाज। गायत्री मंत्र की आवाज के साथ शुरुआत होती है।)

(प्रतिदिन की तरह गुनी, चिनी विद्यालय जाने के लिए तैयार हो रहे हैं और माँ बच्चों के नाश्ते का डिब्बा बनाने में व्यस्त है। घर के बाहर से रिक्शा वाले ने हॉर्न कि जोरदार आवाज–पों पों, पों पों,।)

माँ (बच्चों से)– गुनी! चिनी! जल्दी करो बेटा रिक्शा वाले भैया आ गए हैं।

चिनी– माँ! मेरा जूता कहाँ रखा है? दिख ही नहीं रहा।

माँ– ध्यान से देखो बेटा! वही टेबल के नीचे रखा है।

चिनी– नहीं! दिख रहा माँ आप ही आकर दे दो ना?

माँ– (गुस्से में बाहर आकर) यह तो रखा है बेटा! नीचे देखो।

चिनी– (माँ के गले लगते हुए) मेरी प्यारी माँ मेरी अच्छी माँ!

गुनी– (चिनी से) माँ! इतना बड़ा हो गया है पर एक भी काम समय पर नहीं करता, अपना बस्ता देख लिया न? वर्ना रोज कुछ न कुछ भूल ही जाता है, फिर मुझे विद्यालय में परेशान करता है। कभी पेन भूल जाता है तो कभी रबर और याद है एक दिन तो अपना नाश्ता ले जाना ही भूल गया था, वह तो मैं था वर्ना पूरा दिन भूखा ही रहना पड़ता।

चिनी– चिन्ता ना करो भाई! आज से तुम्हें कोई परेशानी नहीं होगी, मैंने रात में ही याद से सब रख लिया था। (माँ दोनों बच्चों के डिब्बे बस्ते में रखती हैं, दोनों बच्चे माँ के पैर छूते हैं।)

माँ– प्रसन्न रहो।

चिनी– माँ तुम हमेशा प्रसन्न रहो बोलती हो विजयी भव क्यूँ नहीं बोलती? मैंने महाभारत धारावाहिक में देखा है, उसमें विजयी भव बोलते हैं।

माँ– बेटा! तुम लड़ाई करने जा रहे हो या पढ़ने? जब युद्ध करने जाते हैं ना ऐसा तब बोलते हैं।

गुनी– माँ! इससे बोलो धारावाहिक कम देखे, थोड़ी बहुत विद्यालय की पढ़ाई भी कर लिया करे। पूरा दिन खेलकूद करता है या टीवी देखता रहता है।

चिनी– माँ! भाई को बोलो पढ़ाई के साथ खेलना भी आवश्यक होता है। खेलने से शरीर तंदुरुस्त होता है।

गुनी– अच्छा और तुम्हारे चूहे बिल्ली के धारावाहिक देखने से क्या होता है?

चिनी– टीवी देखने से सामान्य ज्ञान बढ़ता है,

भाई आजकल टीवी में बहुत अच्छे धारावाहिक आते हैं आप भी देखा करो।

गुनी– मैं तुम्हारी तरह खाली नहीं रहता, मुझे बहुत पढ़ाई करना पड़ती है, वैसे भी मैं धारावाहिक नहीं देखता बस समाचार सुनता हूँ।

(पार्श्व में हॉर्न कि जोरदार आवाज पों, पों, पों, पों।)

गुनी– चिनी! चल्दी चल, फालतू की बात बाद में करना, देर हो रही है, बाहर रिक्षा वाले भैया प्रतीक्षा कर रहे हैं।

बच्चे– (अपनी माँ के पैर छूते हुए।) नमस्ते माँ!

(माँ दोनों बच्चों को निहारती हुई अपने कामों में व्यस्त हो जाती है।)

दृश्य–२ (घर)

समय–सुबह ६:३० बजे।

अलार्म की आवाज– गायत्री मंत्र के साथ शुरूआत।

(प्रतिदिन की तरह बच्चे विद्यालय जाने के लिए तैयार हो रहे हैं, माँ रसोईघर में नाश्ता बनाने में व्यस्त है। रिक्शे की जोरदार आवाज पों पों पों पों।)

गुनी– माँ! देखो रिक्शा आ गयी और यह अभी तक बिस्तर में ही पड़ा है।

माँ– चिनी! उठो बेटा बाहर रिक्शा वाले भैया आ गए हैं और तुम अभी तक बिस्तर में ही लेटे हो? जल्दी करो देर हो रही है, आज विद्यालय नहीं जाना क्या?

गुनी– (चिनी की ओर गुस्से से देखते हुए) आज फिर तेरे कारण देर हो जायेगी।

चिनी– (नटखट दृष्टि से बिस्तर से चादर हटाते हुए गुनी से) उल्लू बनाया बनाया बड़ा मजा आया। देखो मैं तो पहले से ही तैयार था, बस आपके मजे ले रहा था।

गुनी– (अपनी हँसी रोकते हुए) हा हा बड़ा आनन्द आया और सुनो याद है न आज तुम्हारा हिन्दी की परीक्षा (टेस्ट) है सब पढ़ लिया ना वर्ना वहाँ तुम्हारे मजे हो जाएँगे।

चिनी– माँ! जल्दी बाहर आओ।

माँ– (अपने कामों में व्यस्त सी) क्या हुआ बेटा जल्दी करो रिक्शा वाले भैया कब से भोंपू बजा रहे हैं।

चिनी– माँ! जल्दी बाहर आओ न बहुत आवश्यक कार्य है।

माँ– क्या हुआ बेटा? वही से बोलो मैं काम कर रही हूँ।

चिनी– माँ पहले बाहर आओ फिर बताता हूँ।

माँ– लो आ गयी बोलो?

चिनी– (माँ के पैर छूते हुए) माँ! आज 'प्रसन्न रहो' से काम नहीं चलेगा, 'विजयी भव' बोलना पड़ेगा।

माँ– (हँसते हुए) बेटा इतनी सुबह–सुबह कहाँ युद्ध लड़ने जा रहे हो, आज किस पर विपत्ति आयी है?

चिनी– माँ मेरी कक्षा में एक लड़का है अक्षत नाम का, वह प्रतिदिन मुझसे लड़ता है बहुत परेशान करता है, अपने आप को जाने क्या समझता है, सोचता हूँ आज उसे युद्ध में हरा ही दूँ दिन–प्रतिदिन की लड़ाई समाप्त हो जायेगी।

माँ– (समझाते हुए) नहीं बेटा! लड़ाई करना बुरी बात है।

चिनी– पर माँ! यदि लड़ाई करना बुरी बात है तो महाभारत धारावाहिक में लड़ाई क्यूँ दिखाते हैं?

माँ– बेटा इसमें यही तो बताया है कि लड़ना बुरी बात होती है और लड़ाई से कभी किसी का भला नहीं होता, घर हो या विद्यालय प्रयत्न करना चाहिए कि बातों से ही हल निकल जाये। लड़ाई तो सबसे

अंतिम विकल्प होती है। (रिक्शा की जोरदार आवाज पों पों पों पों।)

माँ– (गुनी से) आज तुम्हारा भाई बहुत गुस्से में है, एक योद्धा की तरह तैयार होकर जा रहा है, ध्यान रखना कही दोबारा महाभारत न हो जाये?

गुनी– (हँसते हुए) चिन्ता न करो माँ! मैं सब सम्हाल लूँगा, दूसरी महाभारत का मौका ही नहीं आने दूँगा। विद्यालय जाकर दोनों महारथियों की सुलह करवा दूँगा।

माँ– (गुनी की प्रशंसा करते हुए) शाबाश बेटा यह हुई ना बात। (हँसते हुए बच्चों के सिर पर हाथ रखते हुए चिनी से) जाओ मेरे वीर और हाँ विजयी भव।

– भोपाल (म. प्र.)

प्रेरक प्रसंग

माँ

– निशा सहगल

दुनिया के सबसे महान वैज्ञानिकों में से एक थॉमस एल्वा एडिसन बहुत ही मेहनती इंसान थे। उन्होंने कई आविष्कार किए थे। जिसमें से सबसे विशेष है बल्ब का आविष्कार। जब थॉमस छोटे थे, तब उन्हें विद्यालय से निकाल दिया था। विद्यालय से उनकी माँ के लिए एक पत्र भी दिया था। बालक थॉमस विद्यालय से घर पहुँचा और अपनी माँ को एक कागज दिया। थॉमस ने माँ से कहा– ''मेरे अध्यापक ने यह पत्र दिया है। कहा है कि केवल माँ ही इसे पढ़ें।''

बच्चे ने अपनी माता से पूछा कि– ''माँ इसमें क्या लिखा है?'' माँ ने पत्र पढ़ना प्रारंभ किया तो उसकी आँखों से अश्रु बह निकले। बेटे के सामने पत्र जोर–जोर से पढ़ने लगी कि– ''आपका बेटा बुद्धिमान है हमारा विद्यालय बहुत छोटा है। हमारे पास थॉमस को पढ़ाने लायक अच्छे अध्यापक नहीं हैं। कृपया आप इसे स्वयं पढ़ाएँ।''

उस दिन के बाद से माँ ने ही अपने बेटे थॉमस को पढ़ाया। थॉमस एडिसन दुनिया के महानतम आविष्कारक बन गए थे। माँ की मृत्यु के बाद एक दिन थॉमस को अध्यापक का वह पत्र मिला। उन्होंने वह पत्र खोला और पढ़ने लगे तो वे हैरान हो गए।

पत्र में लिखा था कि– ''आपका बेटे का

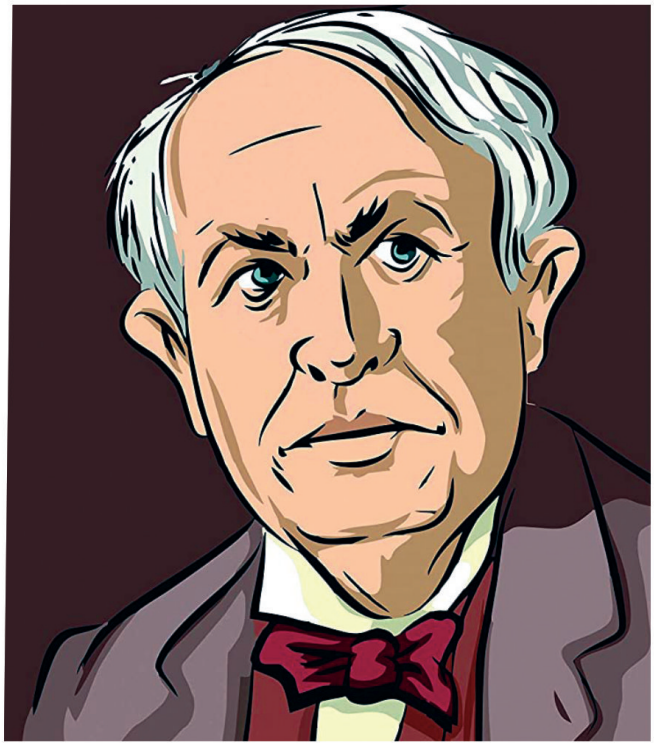

मस्तिष्क कमजोर है। हम उसे नहीं पढ़ा सकते। हम उसे विद्यालय से निकाल रहे हैं।''

पत्र में लिखी सच्चाई पढ़कर थॉमस भावुक हो गए। फिर उन्होंने अपनी डायरी में लिखा कि थॉमस एल्वा एडिसन जो मानसिक रूप से एक कमजोर बालक था, उसकी माँ के आत्मविश्वास ने उसे प्रतिभाशाली इंसान बना दिया।

– फरीदाबाद, हरियाणा

रवीन्द्रनाथ की बाल्यावस्था

– बादलकुमार बनर्जी

''होनहार बिरवान के होत चीकने पात'' के अनुसार बालक रवीन्द्र के बचपन में एक विशिष्टता थी जो साधारणत: इस आयु के बालकों में नहीं पाई जाती।

बालक रवीन्द्र का जन्म धनी घराने में हुआ था पर धनी परिवार के बच्चों में भोग–विलास की जो अधिकता पाई जाती है वह बालक रवीन्द्र के भाग्य में न थी।

आज बीसवीं सदी के इस बदलते हुए जमाने में जो पोशाकें तुम पहनते हो, उनकी सूची बनाई जाय तो काफी लम्बी होगी। सर्दी के मौसम में तो इन वस्त्रों की संख्या और भी बढ़ जाती है– कोट, स्वेटर, गुलूबन्द, पुलोवर, जरकिन्स इत्यादि। परन्तु बालक रवीन्द्र केवल दो सूती कुर्तों से अपना काम चलाया करता था। यह तो हुई सर्दी के मौसम की बात।

गर्मी के दिनों में तो एक कुर्ता ही काफी होता था। परन्तु इस छोटी सी बात के लिए बालक रवीन्द्र ने हमजोली के बच्चों की तरह माता–पिता से न कोई शिकायत की और न जिद ही पकड़ी।

बालक रवीन्द्र के बचपन में ठाकुर परिवार के कपड़े दर्जी नियामत खलीफा सिया करता था। यह नियामत खलीफा कभी–कभी रवीन्द्र के कुर्ते में जेब लगाने की आवश्यकता न समझता था। एक तो केवल एक या दो कुर्ते और उसमें यदि जेब न हो तो इससे छोटे बालक के लिए कितनी कठिनाई होगी। इसका सही अनुमान तुम बच्चों के अलावा और कौन लगा सकता है? काँच की गोलियाँ, रंगीन पेंसिलों के टुकड़े, छोटा बोथरा चाकू इत्यादि मूल्यवान सम्पत्ति कुर्ते के जेब के अलावा भला कहाँ सुरक्षित रखी जा सकती हैं? इसीलिए जब नियामत बिना पाकेट का कुर्ता सीकर लाता, बालक रवीन्द्र बहुत खिन्न हो उठता।

बालक रवीन्द्र ने दस वर्ष की अवस्था से पहले मोजे की सूरत नहीं देखी थी। जूते ही नहीं थे, फिर भला मोजे कहाँ से आते। केवल एक जोड़ी चप्पलें थीं। वे भी पैर के नाप की नहीं, बेडौल एवं भारी।

धनी परिवार में जन्म लेने से सुख और दु:ख दोनों ही सहने पड़ते हैं पर हमारे इस कवि के हिस्से में भगवान ने केवल दु:ख ही दु:ख लिखे थे। कवि का बचपन नौकरों के बीच में बीता। रवीन्द्र का बचपन जिन नौकरों के बीच में बीता व स्वभाव से अच्छे न थे। कवि ने अपनी जीवनी में बचपन का वर्णन करते हुए लिखा है– ''बचपन के संरक्षक नौकरों की मधुर याद अब तक, वजनी घूँसों व तेज जलने वाले चाँटों के रूप में ताजी है।'' इन्हीं नौकरों में एक नौकर का नाम था ईश्वर। ऊपर वाला ईश्वर संसार के लोगों को भोजन देता है, उसी प्रकार इस ईश्वर नामक नौकर के जिम्मे ठाकुर परिवार के बच्चों के भोजन की व्यवस्था थी।

बच्चों को खाना परोसने में वह ऐसी कंजूसी

दिखाता कि भूख रहते हुए भी शर्म के मारे अधिक न माँगा जाता था बच्चों से। दो पूरियाँ परोसकर वह कहता–''और पूरियाँ तो नहीं चाहिए?''

इन पूरियों में उस नौकर के प्राण बसते थे। अतएव मारे शर्म के बालक रवीन्द्र अधिक न माँग सकते।

ईश्वर की खुराक खूब थी। वह अफीमची था, अतएव उसे भूख अधिक लगना स्वाभाविक था। भूख तो भूख, वह बच्चों के हिस्से का दूध भी उन्हें पूरा न देकर आधे से अधिक स्वयं पी जाता।

इसी ठाकुर परिवार के एक दूसरे नौकर का नाम था श्याम। वह बालक रवीन्द्र को एक निश्चित स्थान पर बैठाकर उसके चारों ओर खड़िया से एक घेरा खींच देता और फिर मुँह को गम्भीर बना, आँखें फैलाकर, तर्जनी अँगुली से उस घेरे को दिखाकर कहता– ''यदि घेरे को पार किया तो आफत आयेगी।'' इस आने वाली आफत का कोई स्पष्ट ज्ञान कवि को न था। किन्तु आशंका से कवि का हृदय दहल जाता था। घेरे के बाहर जाने से बेचारी सीता पर कैसी–कैसी आफतों का पहाड़ टूटा था। यह कवि ने रामायण में अच्छी तरह पढ़ लिया था। अतएव वे उस घेरे की महिमा को अविश्वासी की तरह हँसकर नहीं टाल सकते थे।

उनका बचपन श्याम के उस खींचे घेरे के भीतर बैठे–बैठे ही बीता। यह स्थान दुम जिले के दक्षिण–पूर्व के कोने वाले कमरे में था। घेरे में बंदी बालक कमरे की खुली खिड़की से बाहरी संसार का दृश्य देखता। यह दृश्य देखते हुए उसे समय का ज्ञान न रहता। समय मानों पंख लगाकर उड़ जाता।

खिड़की खोलते ही दिखाई पड़ता एक तालाब। तालाब के पक्के बँधे घाट के किनारे, ऋषि–मुनियों की तरह जटा–जूट फैलाये, एक बूढ़ा बरगद का पेड़ था। दक्षिण की ओर नारियल के वृक्षों की कतार भय

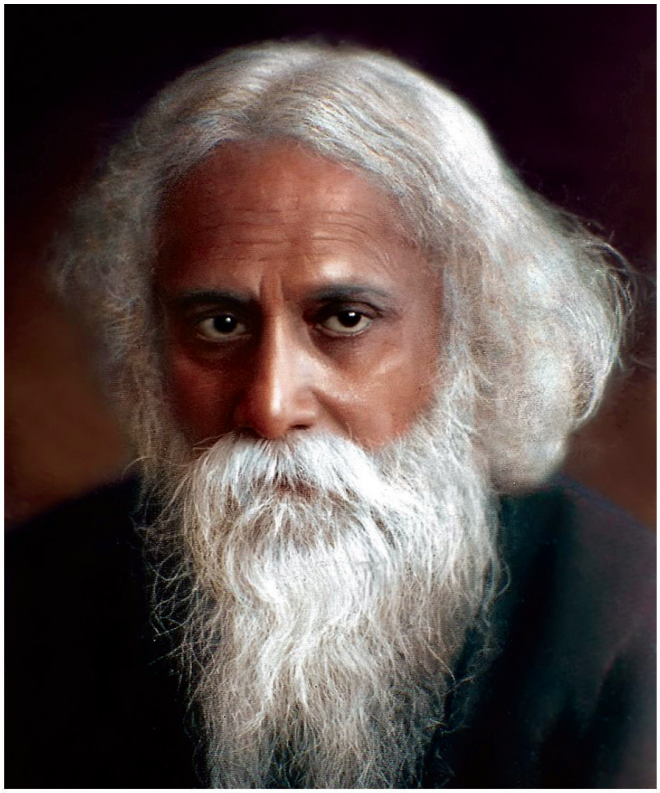

से घबराये शिष्यों की तरह हवा से काँपती हुई, वृद्ध बरगद के सामने सिर झुकाती। सबेरे से दोपहर तक घाट पर नहाने वालों की भीड़–भाड़ रहती।

दोपहर को सीढ़ियों पर फैली धूप, एक–एक सीढ़ी सिमटने लगती; नहाने–वालों की संख्या भी कम हो आती। घाट सुनसान हो जाता। तालाब में इस समय दिखाई देते राजहंस और बत्तख तैरते हुए।

कैदी जिस तरह जेल की कोठरी से बाहर का दृश्य देखता है उसी प्रकार कवि रवीन्द्र का बचपन खिड़की के बाहर के वृक्षों और पशु–पक्षियों को देखने में बीता।

प्रकृति के इन दृश्यों को देखकर कवि उससे मित्रता करने, उसमें स्वयं को रमाने के लिए छटपटाता। वह प्रकृति के पास जाना चाहता, परन्तु ठाकुर परिवार का आदेश ऊँची दीवार से भी अधिक कठोर था।

बचपन में कवि रवीन्द्र को कलकत्ते से बाहर जाने का अवसर कभी नहीं मिला। परन्तु उसके कवि मन ने कल्पना के सुन्दर राज्य में प्रवेश कर लिया।

शिशु कवि के विषय में जो कुछ कहा है, वह उनकी बाल्यकाल की अधूरी इच्छाओं का ही चित्रण है।

कवि के बचपन के सात या आठ वर्ष नौकरों की देखरेख में बीते। नौकरों में 'कृत्तिवास रामायण' और 'चाणक्य श्लोक' का बहुत प्रचार था। इन्हीं दो पुस्तकों से बालक रवीन्द्र ने काव्य पढ़ना प्रारम्भ किया।

कवि के एक भानजे का नाम था ज्योतिप्रकाश। ये कवि से आयु में बड़े थे। इन्होंने ही पहले-पहल कवि को पद्य लिखने की रीति और शैली सिखलाई।

कविता बनाने का ढँग सीखने के उपरांत बालक कवि उत्साहित हो कविता रचने भिड़ गया। अपने बचपन के उन दिनों की कवि ने बाद में बड़ी सुन्दर व्याख्या की थी। हिरण का छौना नये-नये सींग निकलने पर जिस प्रकार यहाँ-वहाँ सींग मारता फिरता है या एक छोटा बच्चा दूध के दो नये दाँत निकलने पर जिस प्रकार उन दाँतों से मिट्टी, पत्थर, बटन इत्यादि किसी भी चीज को नहीं छोड़ता, उसी प्रकार कवि ने भी नई कविता-रचना के नाम पर उत्पात मचाना प्रारम्भ किया। दीवार, कागज के टुकड़े इत्यादि इस उत्पात के अस्त्र बने।

खेद है कि कवि के उत्पाद के वे चिह्न आज ढूँढ़े नहीं मिलते। ठाकुर परिवार के एक मुनीम से कवि ने नीले रंग का एक रजिस्टर बड़ी खुशामद कर माँगा था। इसी रजिस्टर में कवि ने अपने बचपन में पहले पहल कविता लिखना प्रारम्भ किया। पता नहीं, वह रजिस्टर कहाँ खो गया।

कवि को छोटी आयु में ही ओरियण्टल सेमिनरी में भर्ती किया गया। परन्तु विद्यालय की पढ़ाई में कवि का मन नहीं लगा। लाचार हो महर्षि देवेन्द्रनाथ (कवि के पिता) ने बालक रवीन्द्र को साधारण विद्यालय में भर्ती करवा दिया। इसी साधारण विद्यालय में पढ़ते समय बालक रवीन्द्र की कविता रचना आरम्भ हुई। इस समय कवि की प्रशंसा विद्यालय के शिक्षकों के कानों तक पहुँची। वे कभी-कभी बालक रवीन्द्र को कविता बनाकर लाने को कहते।

बालक रवीन्द्र विद्यालय जाने से जी चुराता। उस समय के शिक्षकों का मत था कि मार के बिना विद्या नहीं आती। विद्यालयों में नाना प्रकार के दण्ड-विधान प्रचलित थे। इसी से कोमल बालक का मन विद्यालय जाने के नाम से काँप उठता। वह विद्यालय न जाने के लिए बड़े भाइयों के जूतों में पानी भर उन्हें पहन छत पर चहल-कदमी करता जिससे उसे ज्वर आ जाय और विद्यालयरूपी बूचड़खाने से छुट्टी मिले। पर ईश्वर ने बालक को ऐसा अच्छा स्वास्थ्य दिया था कि दुष्ट ज्वर पास फटकने का नाम नहीं लेता था और बेचारे बालक को मन मारकर विद्यालय जाना पड़ता। शिक्षा पद्धति का यह दोष कवि के हृदय में काँटे की तरह चूभता था। अतएव बाद में उन्होंने आदर्श शिक्षा-पद्धति के लिए बोलपुर में **'शांति-निकेतन'** नामक विश्वविद्यालय की स्थापना की। आज कवि की यह शिक्षा संस्था विश्व की श्रेष्ठ शिक्षा संस्थाओं में गिनी जाती है।

आसान काम!

चित्रकथा देवांशु वत्स

गर्मी का गुस्सा तो देखें

– सुरेन्द्र अंचल

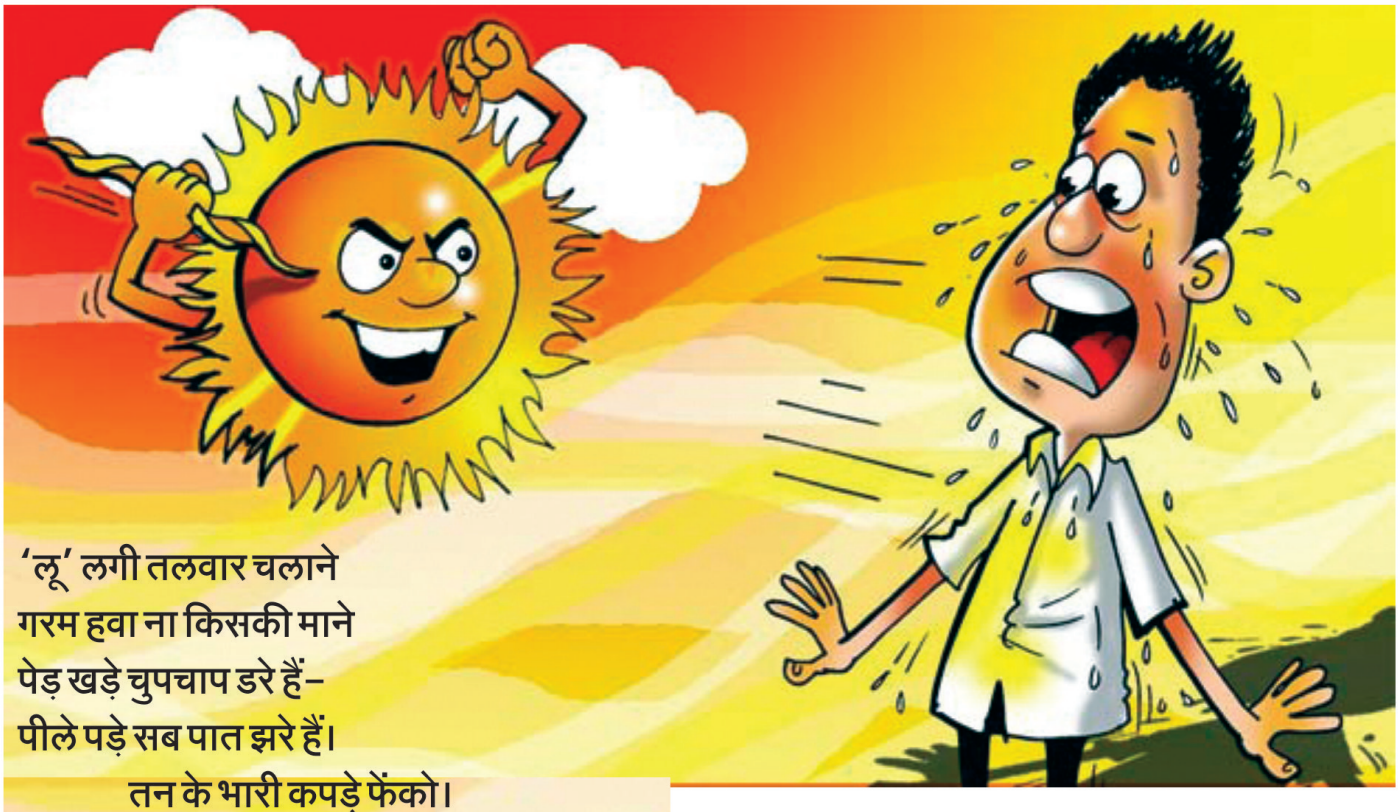

'लू' लगी तलवार चलाने
गरम हवा ना किसकी माने
पेड़ खड़े चुपचाप डरे हैं–
पीले पड़े सब पात झरे हैं।
तन के भारी कपड़े फेंको।
सूरज की किरणों के भाले
सबको ही घायल कर डाले।
लगे सूखने नदियाँ–नाले–
हाफे गैया–भैंस जुगाले।
टप टप बहे पसीना देखो।

– ब्यावर (अजमेर)

आपकी कविता

बच्चो! ऊपर के तीन श्रेष्ठ रचनाकारों की कविताएँ पढ़कर नीचे दिए खाली स्थान पर आपको 'गर्मी' विषय पर अपनी कल्पना को पंख लगाकर एक प्यारी सी कविता लिखना है।

.....

.....

.....

.....

गर्मी

– डॉ. जगदीशशरण बिलगईयाँ 'मधुप'

गर्मी आई गर्मी आई।
सूरज ने भी आँख दिखायी।
सूरज की बेटी धूपा ने,
कितनी जल्दी ली तरुणाई।
शीतल, मंद, सुगंध हवा भी।
गर्म हुई, छाया में आई।
धरती बनी अँगीठी जलती।
शाम हुई, तब कुछ नर्मायी।
बड़ों–बड़ों की जीत चुकी यह,
लेकिन हार श्रमिक से खायी।
हम सब निकलें, दिन छुपने पर।
रात हुई पी लें ठंडाई।

– दतिया (म. प्र.)

सूरज दादा

– गिरीशदत्त शर्मा

सूरज दादा, सूरज दादा, क्यों इतना गरमाते हो
हमने तुम्हारा क्या बिगाड़ा, क्यों इतना गुस्साते हों।
सोकर उठते जब खटिया से
तुमको शीश नवाते हैं
हँसी–खुशी सारा दिन बीते
ऐसा रोज मनाते हैं।
दिनभर तुम इतना तपते, गरम तमाचे जड़ देते हो
पशु–पक्षी व जीव जगत भी, व्याकुल सबको कर देते हो।
वर्षा का जब मौसम आता
ओट बादलों की ले लेते हो
उमड़–घुमड़ जब वर्षा होती
आसमान में खो जाते हो।
जाड़े में तुम बच्चे बन, सबको प्यारे लगते हो
हम भी बैठ खुले आँगन में, तुमसे बाते करते हैं
शाम ढ़ले तुम चल देते हो
हम कमरों में छिप जाते हैं
ओढ़ रजाई ऊपर से हम
दुबक बिस्तरों में जाते हैं।

– संगरिया (राजस्थान)

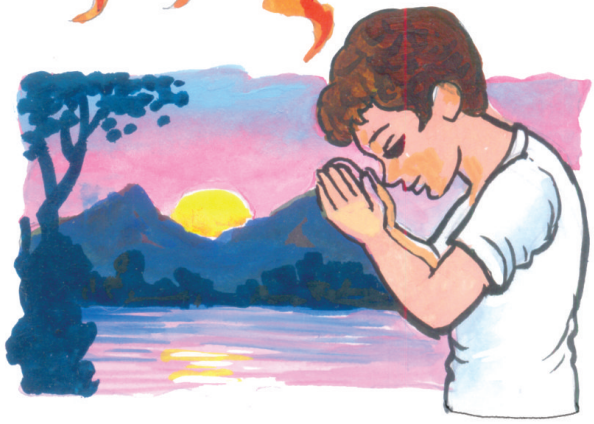

अपमान सहन नहीं करूँगा

– वासुदेव मुळे

१२ मई १९६६ को आगरा में हिन्दू राजा शिवाजी और बादशाह औरंगजेब की प्रथम और अंतिम भेंट दरबार में हुई थी।

जयसिंह की मध्यस्थता से शिवाजी–औरंगजेब की भेंट निश्चित हुई। ''बादशाह की चाहत है कि आपसे मिले, आपको सम्मानित करें, आपको दक्षिण की सूबेदारी भी दें।'' जयसिंह की ऐसी बातें सुनकर शिवाजी ने अपने विश्वस्तों से चर्चा की। ''उस दुष्ट सिंह की गुफा में जाना योग्य नहीं'' ऐसा सभी का मत रहा। किन्तु वंदनीय देवी माँ भवानी का शुभ कौल (संकेत) और ज्योतिषाचार्य ने भी आगरा जाने की स्वीकृति दी। उधर जयसिंह ने भी ''आपको कुछ भी दगा नहीं होगा इसका दायित्व मैं और मेरा पुत्र रामसिंह लेता हूँ।'' कहकर शिवाजी को तैयार किया।

दूरदृष्टि के शिवाजी ने राज्य की पूरी व्यवस्था माता जीजाई के सुपुर्द करके, अपने साथ तानाजी मालुसरे, येसाजी कंक, सर्वेराव जेथे, हिरोजी फर्जंद, बालाजी आवजी, निराजीरावजी, रघुनाथ, त्र्यंबक सोनदेव डबीर आदि श्रेष्ठी वर्ग तथा सैनिकों के साथ बाल शंभूराजे (संभाजी) को लेकर ५ मार्च १६६६ (फाल्गुन शुद्ध नवमी शके १५८७) को आगरा की ओर प्रस्थान किया। आगरा पहुँचने पर शिवाजी के स्वागत में राजा जयसिंह का पुत्र रामसिंह और मुखलिस खान दोनों तैयार थे। शिवाजी और उनके साथ सैनिकों के निवास की अलग से व्यवस्था की गई।

औरंगजेब ने अपने आलीशान दरबार में शिवाजी और संभाजी को उपस्थित करने का आदेश निकाला। १२ मई १६६६ का दिन निश्चित हुआ। दीवान–ए–आम के सुसज्जित सभागार में भव्य दरबार लगा। रामसिंह के साथ शिवाजी राजे और संभाजी (शंभूराजे) दरबार में आये। शिवाजी के सेवकों ने १५०० मोहरें और ६ हजार रुपयों के वस्त्र आदि बादशाह के सम्मुख रखे।

''आइये शिवाजी राजे!'' औरंगजेब के ऐसा कहने पर शिवाजी ने हाथ जोड़े। बादशाह से संकेत पाकर दरबारी सेवकों ने शिवाजी व संभाजी को तीसरी श्रेणी के मुगल सरदारों की पंक्ति में खड़ा किया। यह देखते ही शिवाजी तिलमिला उठे। अपमान से तीव्र क्रोध उमड़ आया। अत्यंत तिरस्कार और अपमानपूर्ण प्रसंग! उद्वेग से शिवाजी ने रामसिंह से पूछा–''क्या इन पंचहजारी सैनिकों के साथ खड़े रहने के लिए मैं यहाँ आया हूँ? हमारा सेनानायक नेताजी भी पंचहजारी श्रेणी का योद्धा है। मैं यहाँ प्राणत्याग कर दूँगा किन्तु अपमान सहन नहीं करूँगा।'' सुनकर दरबार में सन्नाटा छा गया। शिवाजी २५ हाथ की दूरी पर छलांग लगाने में माहिर होने की बात बादशाह जानता था, इसीलिये उसने अपनी गद्दी दूरी पर रखी थी। फिर भी वह घबराया। पश्चात् रामसिंह ने बादशाह को बताया– ''हुजूर! जंगल में रहने वाला यह शेर इस अपरिचित दरबार में आकर बेहोश हुआ है।'' सुनकर बादशाह ने कहा–

''शिवाजी को तुरंत यहाँ से ले जाओ, गुलाबजल का छिड़काव करके होश में आने पर उन्हें विशेष रूप से बनाये उनकी निवास पर पहुँचा दिया जाय।''

अपने निवास पर जाने के बाद शिवाजी समझ गये कि वे बंदी बनाये गए हैं। उधर बादशाह का आदेश था– ''शिवाजी को दरबार में आने की मनाही है। सभी सरदार शिवाजी पर कड़ी निगरानी रखें। यदि शिवाजी यहाँ से भाग गया, तो सभी को कठोर दण्ड दिया जायेगा।''

बच्चो! बादशाही आदेश तो उसके मुगलिया सेनानी और महल की सुरक्षा करने वाले सैनिकों के लिये था। चतुर शिवाजी ने अपने सैनिकों को वापस भेज दिया। अस्वस्थ होने का नाटक प्रारंभ किया और बड़ी ही चतुराई से १७ अगस्त १६६६ को अर्थात् केवल ९६ दिनों में ही स्वयं व शंभूराजे (संभाजी) को उस कड़े बंदीगृह से छुटकारा पाने में उन्होंने सफलता अर्जित कर, शिवाजी अपने साथियों के साथ दक्षिण में सकुशल पहुँच गये।

एक लड़के की तस्वीर की ओर इशारा करते हुए सुरेश ने अजय से कहा, 'वह मेरी माँ के इकलौते बेटे का बेटा है।' सुरेश का उस लड़के से क्या संबंध है?

उत्तर: सुरेश लड़के का पिता है।

सीख

– जया मोहन

रामू नाम का एक किसान था। वह एक गाँव में अपनी पत्नी व प्यारी बेटी लाडो के साथ रहता था। रामू के घर में कुत्ता जैकी, मीमी बिल्ली, कुक्कू मुर्गा, चूं चूं चूहा व पट्टू तोता रहते थे। लाडो सबको बहुत प्यार करती थी। सभी जानवर भी आपस में खूब प्यार से रहते खेलते थे। जो भी देखता आश्चर्य करता जैकी के ऊपर मीमी लेट जाती उनके ऊपर कुक्कू कूद फाँद करता।

चूं चूं भी बीच–बीच में फुदकता रहता। तोता यदि कोई शैतानी करता तो टें टें कर डाँटता रहता।

एक दिन चूं चूं की बहन का लड़का गप्पू शहर से आया। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि बिल्ली न तो कुत्ते से डरती है न ही मुर्गा व चूं चूं। ''मौसी! आप मत जाया करो कभी इन्हें क्रोध आ गया तो ये खा जायेंगे।'' ''अरे नहीं बेटा! तुम डरो मत। सबका सम्मान करो। हाँ बेटा! एक बात याद रखना कभी किसी चीज को नुकसान मत पहुँचाना।''

चूं चूं ने उसे सबसे मिलवाया। गप्पू अब आजादी से सारे घर में घूमने लगा। गप्पू बहुत शैतान था। वह कभी कुत्ते की पूँछ खींच देता तो कभी बिल्ली के कान। चूं चूं को पता चला तो उसने डाँटा।

एक दिन गप्पू ने गेहूँ की बोरी कुतर दी। गेहूँ बिखर गया। यह देखकर रामू को बहुत गुस्सा आया। उस दिन जैकी, मीमी, कुक्कू ने चूं चूं से शिकायत की। चूं चूं ने क्षमा माँगी। गप्पू मना करने के बाद भी नहीं मानता।

एक दिन रामू को पड़ोस के गाँव में शादी में जाना था। लाडो के लिये वह नयी फ्रॉक लाया था। जब लाडो ने पहनने को फ्रॉक निकाली तो वह जगह–जगह से कुतरी हुई थी। लाडो रोने लगी। रामू को बहुत क्रोध आया। ''मैं आज ही बाजार से दवा लाकर आटे में मिला दूँगा। ये शैतान चूहे खाकर मर जायेंगे।'' ''नहीं नहीं बाबा! आप चूहेदानी ले आयें।'' रामू शाम को दवा ले आया। आटे में सानकर गोली बनाकर डाल दी।

चूं चूं ने कहा गप्पू वहाँ मत जाना। न ही कुछ खाना। गप्पू नहीं माना। जाकर गोली खा ली। खाते ही गला जलने लगा। गिरते–पड़ते घर पहुँचा। उसके मुँह से दवा की बू आ रही थी। ''हे राम! ये नहीं माना।'' चूं चूं गर्म पानी में ढेर सा नमक मिलाकर गप्पू को पिलाया। उसे उल्टी हुई तो थोड़ा आराम मिला। चूं चूं ने देसी घी पिलाया।

रामू सुबह डाली हुई गोलियाँ ढूँढ़ने लगा। ''एक कम है। मरा हुआ चूहा दिखाई नहीं दे रहा।'' रामू ने कहा ''मैं चूहे का बिल सीमेन्ट पत्थर से बन्द कर देता हूँ। ये भाग जायेंगे।'' चूं चूं के न आने से उसके मित्र उदास थे। चूं चूं ने सुना कि बिल बंद होने वाला है। मैं इतने प्यारे मित्रों को छोड़कर कहाँ जाऊँगा। कितने अच्छे हैं मालिक–मालिकन व लाडो। वह दौड़ता हुआ जैकी के पास पहुँचा। वह बोला–

''जैकी भैया! बात सुनो
मालिक से तुम ये कहो
घर हमारा न बंद करें

हमें यहाँ पर रहने दें
अब न कभी गलती होगी
कान पकड़ते क्षमा करें।

''भौं भौं भौं! चूं चूं मेरे कहने से मालिक मेरी बात समझ नहीं पायेंगे तुम मीमी से कहो। चूं चूं मीमी के पास गया।

मीमी बहना! बात सुनो
मालिक से तुम ये कहो
घर हमारा न बंद करें
हमें यहाँ पर रहने दें
अब न कभी गलती होगी
कान पकड़ते क्षमा करें।

''म्याऊँ म्याऊँ म्याऊँ! चूं चूं भाई! मेरी बात मालिक नहीं समझ पायेंगे तुम कुक्कू से कहो।'' चूं चूं कुक्कू के पास गया बोला–

कुक्कू भैया! बात सुनो
मालिक से तुम ये कहो
घर हमारा न बंद करें
हमें यहाँ पर रहने दें
अब न कभी गलती होगी
कान पकड़ते क्षमा करें।

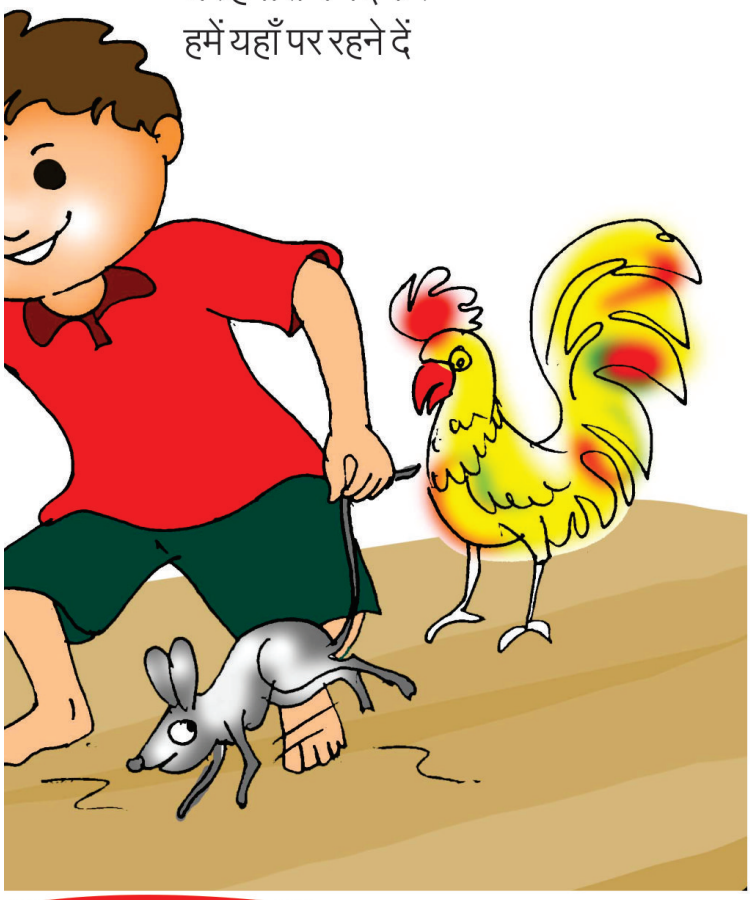

''कुकडूँ कूँ कुकडूँ कूँ! चूं चूं! मेरी बात भी वे नहीं समझेंगे। हम सब लोग एक साथ चलेंगे मालिक के पास तुम पट्टू से जाकर कहो। उसकी बात मालिक समझ जायेंगे।'' चूं चूं पट्टू के पास जाकर बोला–

पट्टू भैया! बात सुनो
मालिक से तुम ये कहो
घर हमारा न बंद करें
हमें यहाँ पर रहने दें
अब न कभी गलती होगी
कान पकड़ते क्षमा करें।

''टें टें! अच्छा अच्छा, रोओ मत। शाम को मालिक से मैं कहूँगा तुम सब उनके पास आ जाना।'' ''धन्यवाद पट्टू भाई!''

शाम को रामू खेत से लौटा। लाडो सबको खाना दे दो। तभी उसने देखा मीमी आकर गोद में बैठ गयी। जैकी पैर चाटने लगा, कुक्कू कंधे पर बैठ गया चूं चूं भी पैर पर लौटने लगा। रामू ने आवाज दी। ''देख लाडो! आज ये सब मुझे घरकर बैठे हैं शायद कुछ चाहते हैं।'' ''हाँ बाबा! मुझे भी ऐसा ही लगता है।'' पट्टू ने कहा ''लाडो लाडो! चूं चूं को क्षमा दिला दो। मालिक चूं चूं का घर बंद न करें। हम सब उसकी ओर से क्षमा माँगते हैं।'' सब अपनी–अपनी भाषा में बोल रहे थे।

रामू को इनका आपसी प्यार देखकर दया आ गयी। वह हँसते हुए बोला जाओ मैंने क्षमा किया। मैं चूं चूं का घर बंद नहीं करूँगा। सभी प्रसन्नता से झूम उठे धन्यवाद मालिक। अच्छा चलो सब अपना–अपना खाना खाओ और मुझे भी खाने दो। ''चल लाडो! कह कर रामू घर के अंदर चला गया। गप्पू सबके सामने आकर बोला मुझे सीख मिल गयी कि बड़ों का कहना मानना चाहिये। आज आपके कारण मेरी मौसी का घर बच गया। रोते हुए गप्पू को चूं चूं ने गले लगा लिया।

– प्रयाग (उ. प्र.)

लू की आत्मकथा

– ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश'

मैं लू हूँ। लू यानी गरम हवा। गर्मी में जब गरम हवा चलती है तब इसे ही लू चलना कहते हैं। क्या आप मुझे जानते हो? नहीं ना? तो चलो, मैं आज अपने बारे में बताकर आपको अपनी आत्मकथा सुनाती हूँ।

अधिकांश गर्मी के दिनों में गरम हवा चलती है। इसे ही लू चलना कहते हैं। इस समय वातावरण का तापमान ४० डिग्री से अधिक हो जाता है। यह तापमान आप के शरीर के तापमान ३७ डिग्री से अधिक होता है।

इस ताप पर शरीर की स्वनियंत्रित तापमान प्रणाली शरीर का काम ठीकठाक ढंग से करती है। इसका काम शरीर का तापमान ३७ डिग्री बनाए रखना होता है। यदि वातावरण का तापमान इस ताप से अधिक हो जाता है और आप लोग गर्मी में बाहर निकल कर खेलते हैं तो तब तुम्हारे शरीर की यह प्रणाली सक्रिय हो जाती है। इस समय यह शरीर से पसीना बाहर निकालती रहती है तुम्हारे शरीर का तापमान ३७ डिग्री बनाए रखा जा सके।

पसीना आने से शरीर का तापमान सामान्य हो जाता है। पसीना हवा से सूख जाता है। इससे शरीर में पानी की कमी होने लगती है। इस समय आपको प्यास लगने लगती है। यदि आप समय-समय पर पानी पीते हो तो शरीर में पानी की पूर्ति हो जाती है।

कभी-कभी इसका उल्टा हो जाता है। आप समय-समय पर पानी नहीं पीते हो तो शरीर में पानी की कमी हो जाती है। इस दौरान धूप में खेलने या गर्म हवा के संपर्क में आने से शरीर में पानी की कमी होने से वह अपने सामान्य तापमान को बनाए रखने के लिए अधिक पसीना निकाल नहीं पाता है। इसके कारण शरीर का तापमान बढ़ जाता है। शरीर के इस तरह तापमान बढ़ने को लू लगना कहते हैं।

लू लगने का आशय आपके शरीर का तापमान अधिक बढ़ जाना होता है। इस दौरान शरीर अपने तापमान को बनाए रखने में असमर्थ हो जाता है। इससे शरीर को बहुत नुकसान होता है। शरीर में पानी की कमी हो जाती है। इससे आपका खून गाढ़ा हो जाता है। जिससे रक्त संचरण में रुकावट आती है। इस रुकावट के कारण से चक्कर आना, उल्टी होना, बेहोशी होना, आँखें जलना जैसी शिकायत होने लगती है। यह सब लू लगने के लक्षण होते हैं।

यदि लू लगने के बाद भी धूप में रहा जाए तो कभी-कभी इंसान की मृत्यु हो जाती है। इस कारण गर्मी में लू के कारण कई जनहानि होती रहती है। मगर, आप सोच रहे होंगे कि मैं यानी लू बहुत खतरनाक होती हूँ। नहीं भाई! आपका यह सोचना गलत है। मेरे चलने से ही समुद्र के पानी का वाष्पन होता है। इसी कारण से बरसात आने की संभावना बनती है। यदि मैं न रहूँ तो आपके बहुत सारे काम रुक जाये।

वैसे आप कुछ सावधानियाँ रखकर मुझसे बच सकते हो। आप चाहते हो कि मैं आपको नुकसान नहीं पहुँचाऊँ तो आपको कुछ बातों का ध्यान रखना होगा। गर्मी के दिनों में खूब पानी पीकर बाहर खेलना चाहिए। जब भी बाहर जाओ तब सिर पर सफेद कपड़ा या टोपी लगाकर बाहर निकलो। दिन के समय सीधी धूप में न रहो। खूब पानी या तरल पदार्थ पीकर तुम मुझसे और मेरे प्रभाव से बच सकते हो।

बस! यही मेरी छोटी सी आत्मकथा है। यह तुम्हें अच्छी लगी होगी, मैं समझती हूँ कि अब आप मुझ अच्छी तरह से समझ गए होंगे। मैं ठीक कह रही हूँ न? हाँ! अब अधिक गर्दन मत हिलाओ। मैं समझ गई हूँ कि तुम समझ गए हो। इसलिए अब मैं चलती हूँ। मुझे अपने हिस्से के कई काम करना हैं। कहते हुए लू तेजी से चली गई।

– नीमच (म. प्र.)

छोटी कहानी

पिंजरा, खिड़की और गौरैया

– दिनेश दर्पण

घर की खिड़की पर एक पिंजरा रखा हुआ था। देखने में तो वह साधारण सा पिंजरा ही था। परन्तु जब उसमें किसी पंछी को बंद किया जाता था। तब वह उसे छोड़ देता था। सुबह–सुबह मुँह अँधेरे जब सब लोग सो रहे होते। पिंजरा और खिड़की का छोटा सा ताक (दरवाजा) खुल जाता, पिंजरा भी अपने तार फैलाकर चौड़े कर देता और पंछी फुर्र से उड़ जाता।

एक बार एक तोते को उसमें रखा गया। सुबह सदा की तरह पिंजरे ने अपने तार फैला दिये, मगर तोता तो गहरी नींद में सो रहा था। पिंजरा बोला– ''अरे उठ! सुबह हो गई उड़ जा।''

''क्यों! आप मुझे भगा रहे हैं?'' ''हाँ जा! आजादी से जीवन जीना।'' ''हूँ, आजादी से जीऊँ! क्यों जी मुझे वहाँ खाने–पीने को कौन देगा? जमीन पर से लोगों के जूठे टुकड़े बटोरता फिरूँगा क्या?''

''पर तू तो पिंजरे में बंद है?'' ''तो क्या हुआ?'' ''तुम्हारी समझ में कुछ आ रहा है।'' पिंजरे ने उस छोटे से पिंजरे की खिड़की के आकार की ताक से पूछा। ''मुझे लगता है यह तोता बहुत समझदार है।'' उसने पिंजरे को जवाब दिया। दिन बीतने लगे तोता चैन से जी रहा था पर पिंजरा सोच में पड़ गया कि तो क्या फिर मैं बेकार में ही पक्षियों को छोड़ता रहा था? तो क्या उनके लिए आजादी से जीना अधिक मुश्किल है। उसे यह प्रश्न हमेशा कुरेदता रहता था।

फिर एक बार तोता किसी दूसरे आदमी को दे दिया। और उस खाली हुए पिंजरे में एक गौरैया को बंद कर दिया गया।

''छोड़ मुझे, गंदा कहीं का!'' दरवाजा बंद होते ही गौरैया चिल्लाने लगी। ''अरे धीरज रख पगली।'' पिंजरा उसे समझाने लगा, ''यहाँ तुझे दाना–पानी मिलेगा।'' पर गौरैया तो कुछ सुनना ही

नहीं चाहती थी। उसने तो बस ''मुझे छोड़... मुझे छोड़....'' की ही रट लगा रखी थी।

''अब तुम्हारी समझ में कुछ आया?'' पिंजरे ने खिड़की (ताक) से पूछा।

''मुझे लगता है कि, यह गौरैया बहुत होशियार नहीं है। खिड़की (ताक) ने खुलते हुए उत्तर दिया।

पिंजरे ने भी एक गहरी साँस लेकर अपने तार फैला दिए। गौरैया खुशी से चहचहायी और पलक झपकते ही खिड़की से बाहर निकल गई तथा एक बार खुले में गहरी व आजादी से साँस ली और चहचहाते हुए पंख फैलाकर मुक्त गगन में उड़ गई आकाश ने हाथ फैलाकर उसका स्वागत किया।

थोड़ी देर बाद पिंजरे ने खिड़की (ताक) से कहा– ''पता नहीं क्यों मुझे वह गौरैया जो बहुत होशियार नहीं थी, फिर भी अच्छी लगने लगी थी।''

खिड़की ने उत्तर दिया– ''हाँ..... मुझे भी। अरे... गुलाम की तरह पिंजरे में बंद रहने वाले मुझे बिल्कुल पसंद नहीं।

– तराना (म. प्र.)

पानी के बून्दों की माला

– डॉ. राजीव तांबे, सुरेश कुलकर्णी

आवश्यक साम्रगी

१० आईस क्यूब (पक्के बर्फ के टुकड़े, जो फ्रीज के आईस ट्रे में आसानी से उपलब्ध होंगे।)

एक मीटर मोटा धागा।

एक कटोरी नमक।

एक चम्मच।

एक बड़ी प्लेट।

चलो करते हैं अपना काम प्रारंभ।

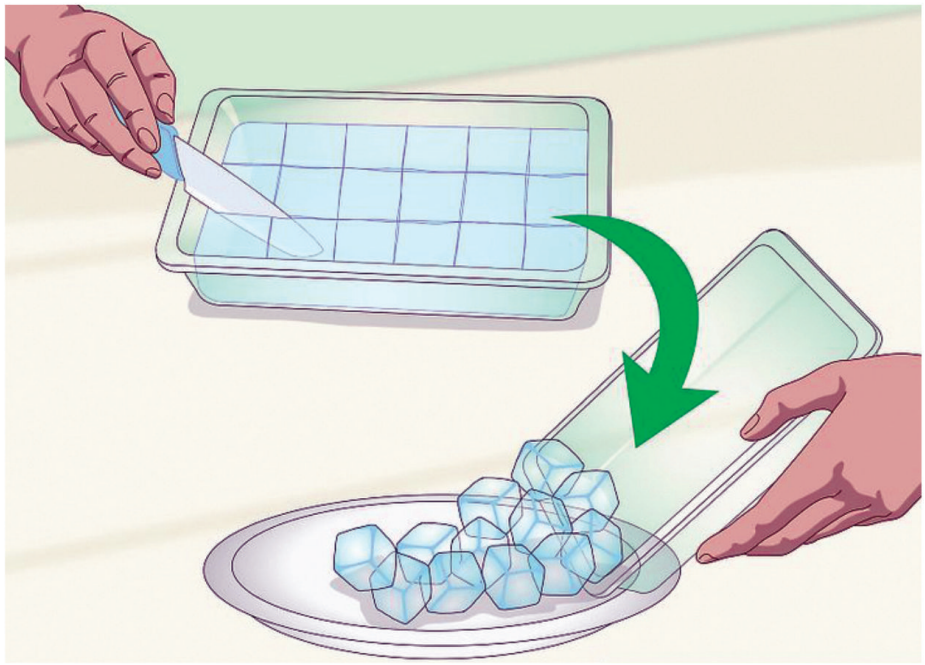

बड़ी प्लेट में बर्फ के आठ से दस क्यूब डालो। एक बर्फ के क्यूब पर आधा चम्मच नमक डालो, और लगे हाथ मोटा धागा आड़ा रखो और धीरे से उस धागे को नीचे दबाना शुरू करो। अब केवल चार सेकण्ड रुको और धागा ऊपर उठाओ। धागे के साथ बर्फ का क्यूब अपने आप ऊपर उठेगा।

मतलब अपनी माला का एक मोती तैयार हो गया। बस इसी क्रम में जल्दी–जल्दी माला बनाना शुरू करो। हो गई बर्फ की ठण्डी–ठण्डी माला तैयार।

यह कैसे बनती है इस प्रश्न का उत्तर आपके लिए उपस्थित है।

यह तो आप सभी को ज्ञात है कि पानी का तापमान ० डिग्री सेल्सियस हुआ कि पानी का बर्फ बनता है। इस पानी को हिमांक कहते हैं। बर्फ पर अगर नमक छिड़का अथवा बर्फ में नमक मिलाया तो बर्फ का हिमांक पुन: ० डिग्री बनने के कारण पानी का रूपांतर पुन: बर्फ में होता है। और इसी कारण बर्फ धागे से उठाया जाता है। ऐसे ही बर्फ की माला बनाई जाती है।

अब नया प्रयोग

आपके मन में यह विचार अवश्य आया होगा कि बर्फ सफेद होता है, अगर इसमें रंग मिलाया तो क्या होगा? अलग–अलग आकार से बर्फ के क्यूब्स लिये तो क्या होगा? करके देखो।

एक आईना लो और सूरज की किरणें आपने बनाई इस बर्फ की माला पर डालो और देखो क्या होता है? जो हुआ वह अवश्य लिखकर रखें।

– इन्दौर (म. प्र.)

संस्कृति प्रश्नोत्तरी के सही हल

(१) महारानी मन्दोदरी। (२) योगेश्वर श्रीकृष्ण।
(३) दक्षिण पूर्व एशिया। (३) शृंगेरी।
(५) महाकवि कालिदास। (६) नेताजी पालकर।
(७) १०८ (८) वासुदेव बलवंत फड़के।
(९) नागौर दुर्ग। (१०) २८ वर्ष बाद।

अमलतास फूले

– डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ

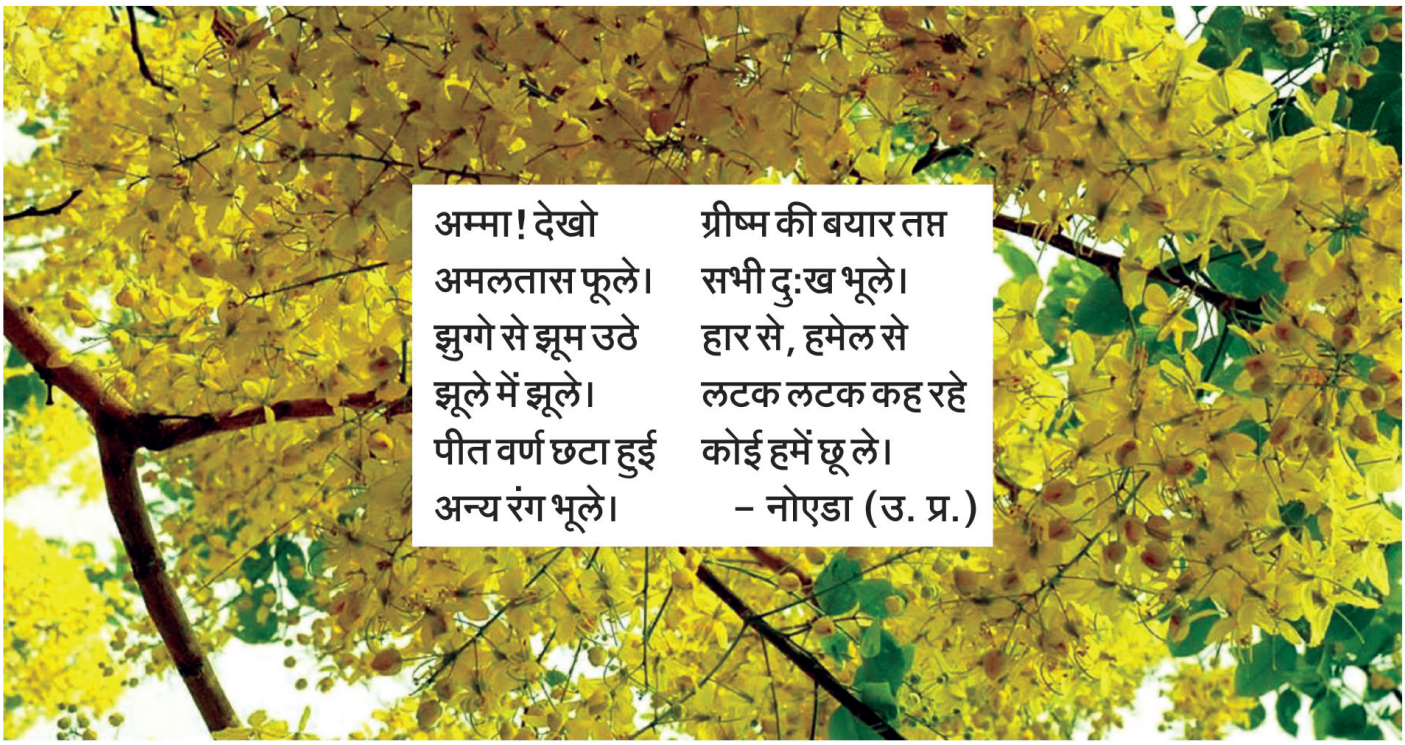

अम्मा! देखो
अमलतास फूले।
झुग्गे से झूम उठे
झूले में झूले।
पीत वर्ण छटा हुई
अन्य रंग भूले।

ग्रीष्म की बयार तप्त
सभी दु:ख भूले।
हार से, हमेल से
लटक लटक कह रहे
कोई हमें छू ले।
– नोएडा (उ. प्र.)

(देवपुत्र के नवम्बर २०२० के अंक के सन्दर्भ में)

'देवपुत्र' का मार्च २०२१ अंक मिला धन्यवाद! इसकी सार्थक सामग्री पठनीय एवं सराहनीय है। बच्चों के साथ–साथ हम प्रौढ़ों के ज्ञान में भी वृद्धि करती है। साधुवाद!

– राजेन्द्र 'निशेश', चण्डीगढ़

मेरी पाती देवपुत्र के नाम।
मेरा कोटि प्रणाम।।

आ गये प्रभु श्री राम, अपने पावन धाम।
आमुख पृष्ठ का चित्र, मनभावन, अभिराम।।

आये कौशल्या लाल, मिटा कोरोना काल।
देवपुत्र को पाकर, पाठक हैं खुशहाल।।

जागी है नव आस, जगा नया विश्वास।
आने वाले दिन, होंगे और भी खास।।

लौटी है मुस्कान, जागे हैं अरमान।
धन्यवाद श्रीमान, दिया हमें स्थान।।

– मृगेन्द्र कुमार श्रीवास्तव 'तन्हा'
शहडोल (म. प्र.)

चाँद का मुँह टेढ़ा

– कुँवर प्रेमिल

बच्चे तो बच्चे, कोई न कोई नया खेल ढूँढ़ ही लेते हैं। उनका मस्तिष्क नवीन सृजन से परिपूर्ण होता है। वे स्वयं तो ऊर्जावान होते ही हैं, अपने दिमाग का उपयोग भी वे कुछ न कुछ प्राप्त करने में लगा देते हैं।

और तो और, खेल–कूद में भी वे अपने ज्ञान का घोड़ा तेजी से दौड़ा ही देते हैं।

एक दिन कौशिक, बिस्सू, श्याम, गुरमीत, मोहन–मोहिनी सभी हरे–भरे बागीचे में खेल रहे थे। तभी आसमान में लुढ़कता हुआ चाँद उन्हें दिखाई दे गया। रुपहले–सुनहरे और उजली काया वाले चाँद को देखकर उन्होंने एक छोटी सी नाटिका का सृजन कर डाला।

बच्चों ने माली दादा के सोने वाले तखत को मंच और बिस्तर में लिपटी चादर को पर्दा बना लिया। अब तय यह हुआ कि चाँद को देखकर किसके मन में कैसे उद्‌गार उठते हैं, वह मंच पर आकर बिना पूर्व तैयारी के, सबके समक्ष रखे। अद्‌भुत प्रस्ताव था बच्चे ही नाटक के पात्र और वे ही उसके दर्शन भी।

यह कोई जीत–हार वाली स्पर्धा थी न कोई प्रतियोगिता ही। बस उन्हें चाँद के निवासी बनकर चाँद वर्णन करना है बस।

''ठीक है।'' सभी समवेत स्वर में बोल पड़े

कौशिक ने पर्दा उठाया। श्याम मंच पर आ

गया। उसने दर्शक दीर्घा में बैठे सभी को नमस्कार कहा। फिर बोला– ''मैं यदि चाँद पर रहता तो वहाँ गिल्ली–डंडा का खेल जमा लेता। चाँद के उजाले में गिल्ली गुमती भी नहीं, सच मजा आ जाता। चाँद को थका डालता। मैं जब गाँव में का, गिल्ली डंडा का कुशल खिलाड़ी था।

सच कितना उजला–उजला और ठंडा–ठंडा है चाँद। मैं तो उसकी मांद में भी चहलकदमी कर आता।

कौशिक ने पर्दा गिराकर तुरंत उठा भी दिया। तभी गुरमीत कूदता–फाँदता मंच पर आ खड़ा हुआ।

बोला– ''गिल्ली डंडा से गेंद गड़ा कहीं अधिक उत्तम होता। गिल्ली की अपेक्षा गेंद अधिक आसानी से फुदकती। फेंको इधर, जाती उधर जैसे दुनिया गोल, वैसे गेंद भी गोल। गेंद गड़ा खेलते देख स्वयं चंद्रमा भी मेरे साथ गड़ा गेंद खेलने लगता।

मैं उससे खूब दाम लेता। सारा मामापन ही भुला देता। बेचारा है कितना सा गोल–मोल। मेरे खाने की थाली के बराबर ही तो, उसे अपने शाला बस्ते में छुपाकर अपनी कक्षा में ले जाता। दीदी जैसे ही मेरा बस्ता खुलवाती मैं उन्हें चाँद दिखा देता। दीदी की आँखें चकाचौंध से भर जाती।''

कौशिक ने फिर त्वरित गति से पर्दा गिराकर उठा भी दिया। यह मोहन था, सभी को नमस्कार कितनी शालीनता से कर रहा था।

मोहन बोला– ''मित्रो! टेबल–टेनिस खेलना वहाँ अधिक सुविधाजनक होता। छोटी सी गेंद भी खरगोश सी उछलती। न गिल्ली डंडा और न गेंद गड़ा बस टेबल टेनिस ही उपयुक्त होती। पृथ्वी जैसा कूड़ा–करकट थोड़े ही वहाँ है जो हम सब देहाती खेल–खेलकर चाँद को मायूस करते।

टेबल टेनिस खेलना एक जादू जैसा होता। चाँदराम खुद्दई (स्वयं) आकर टेबल टेनिस खेलने लग जाता। जब हारते तब देखते, उनका मुँह कैसा टेढ़ा हो जाता।

हम लोग जोर–जोर से चिल्लाते– ''चाँद का मुँह टेढ़ा है जी।''

कौशिक ने फुर्ती दिखाई पर्दा गिराने और उठाने में मोहिनी अपनी मोहिनी मुस्कान लिए उपस्थित थी। मोहिनी ने अपनी बात आगे बढ़ाई।

''मित्रो! न गेंद, न गिल्ली न टेबल टेनिस, चाँद पर फुटबॉल खेलने का आनन्द ही कुछ और होता जी। लड़कियों की टीम की मैं मुखिया होती। चाँद लड़कों की ओर से मुखिया हो जाता।

लड़के ये न समझें कि लड़कियाँ फुटबॉल नहीं खेल सकतीं। लड़कों की बराबरी से दौड़ नहीं सकतीं। लड़कियों ने कितने ही स्वर्ण पदक जीते हैं। मैं इतनी जोर से किक मारती कि फुटबॉल चाँद भाई को ठोकती हुई आगे बढ़ जाती। फुटबॉल की ठोकर से इस बार अवश्य चाँद का मुँह टेढ़ा हो जाता।''

मोहन तब तक मंच पर शीघ्रता से आ पहुँचा था। आगे तारतम्य बनाकर बोला– ''आप सभी तो जानते ही हैं कि 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' कविता संग्रह के सुप्रसिद्ध कवि गजानन माधव मुक्तिबोध ने उनकी कविताएँ खूब सराही गई हैं। अब कौशिक भाई की बारी है।''

कौशिक बोला– ''चाँद पर रहना हुआ तो चाँद की कटोरी में दूध भात अवश्य खाऊँगा। अगले चंद्रयान के दक्षिणी ध्रुव पर पहुँचने से पहले ही मैं पहुँच जाऊँगा। उस चंद्रयान का स्वागत मैं ही करूँगा। चाँद को तो मैं अपने पीछे ही खड़ा रखूँगा... जय हिंद।''

पर्दा गिर गया। चाँद परदे के पीछे ओझल हो गया।

– जबलपुर (म. प्र.)

चींटियों का सबक

– अलीशा सक्सेना

गर्मी का दिन था बहुत मेहनत करने के बाद चींटियों ने अपने लिए एक घर बनाया। अपनी रानी के लिए उस घर के बीचों–बीच एक सुन्दर सा महल बनाया। उसके आस–पास छोटी–छोटी गलियों में प्रजा के लिए घर बनाया। बच्चों के खेलने के लिए एक बाग भी बनाया, इतना ही नहीं एक बड़ा सा बाजार भी बनाया उसके पास एक विद्यालय भी बनाया। और पता है यह सब उन्होंने केवल मिट्टी से और बहुत मेहनत से बनाया।

पर वे चींटियाँ ये नहीं जानती थी कि उन्होंने वह महल एक बहुत शरारती लड़के पिंटू के घर के बागीचे में बनाया था। पिंटू बहुत अधिक नटखट था। वह कीड़े–मकोड़ों को पैरों तले कुचल देता। किसी भी प्राणी पर दया करना उसके स्वभाव में नहीं था।

एक दिन जब वह अपने बागीचे में खेल रहा था उसे एक झाड़ के पीछे चींटियों का महल दिखा और उस शैतान बच्चे ने उसे तोड़ देने का सोचा। वह तेजी से भागता हुआ आया और इतनी मेहनत से बने उस महल पर चढ़ गया और उसे तोड़ दिया।

यह देखकर चींटियों को बहुत क्रोध आया और उन्होंने रानी से इस बात की शिकायत की। रानी चींटी ने उन्हें समझाया और फिर से महल बनाने का आदेश दिया। चींटियाँ एकजुट होकर फिर से महल बनाने लगीं और देखते–देखते वह महल पहले से अधिक सुन्दर बन गया। अगले दिन चिंटू फुटबॉल खेल रहा था। उसकी बॉल गलती से एक एक झाड़ी में गिरी जब वह लड़का बॉल लेने गया तब उसे वहाँ चींटियों का महल फिर से खड़ा मिला।

अब तो उसे पहले से अधिक क्रोध आया। उसने फिर से उसे तोड़ने का विचार किया। क्रोध में भरे हुए पिंटू ने आव देखा न ताव और उस महल पर कूद गया। महल को तहस–नहस कर दिया। इस बार चींटियों कि सेना जो पहले से तैयार थी ने चिंटू पर हमला कर दिया। चींटियों की सेना में थोड़ी मोटी हृष्ट–पुष्ट और बड़ी चींटियाँ थीं। क्योंकि रानी अपनी सेना को बहुत पौष्टिक आहार दिया करती थी। उसने जोरदार हमला कर दिया जब चींटियों ने पिंटू को जगह–जगह काटना शुरू किया तो वह जोर–जोर से रोने लगा।

तब उस महल की चींटियों की रानी ने कहा– ''बालक हमने तुम्हें पिछली बार क्षमा कर दिया था, जिसके कारण तुमने हमें कमजोर समझ लिया था। हम अकेले कमजोर हो सकते हैं पर अगर एक साथ हैं तो हमारा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता है इस बार भी तुम्हें एक और अवसर दे रहे हैं अभी क्षमा माँगों और यहाँ से चले जाओ और वापस यहाँ आकर हमें परेशान मत करना।''

दर्द से बिलबिलाता हुआ पिंटू वहाँ से भाग खड़ा हुआ तब उसको समझ में आया कि हमें किसी को अपने से छोटा नहीं समझना चाहिए। और बिना कारण किसी के काम में टांग नहीं अड़ाना चाहिए। एकता में कितनी शक्ति है यह बात भी पिंटू की समझ में आ गई।

– इन्दौर (म. प्र.)

कविता

नहीं देखती जो सपनों को

– डॉ. गोपाल राजगोपाल

नहीं देखती जो सपनों को, पत्थर है वो आँख नहीं।
है अनंत सपनों की शक्ति, भूले से कम आँक नहीं।।

सपना देखा आजादी का
भारत की संतानों ने।
आजादी की ज्योत जली फिर
ये देखा वीरानों ने।
जो दिखता है वहीं देखना
इन आँखों का काम नहीं।।

'सपने देखो' ये कलाम का, ब्रह्म–वाक्य बस याद रहे।
आँखें सपनों का गुलशन हो, सपनों से आबाद रहे।

सपना वो जो सोने ना दे
करने दे आराम नहीं।।
जिसने देखा छोटा सपना
उसका है अपराध बड़ा।
समय नहीं फिर क्षमा करेगा
उसका है हर न्याय कड़ा।
हट कर अलग तुम्हें करना है
करना है कुछ आम नहीं।।

– उदयपुर
(राजस्थान)

आओ ऐसे बनें

क्षमा कीजिए

– मदनगोपाल सिंहल

प्रयागराज के कम्पनी बाग में प्राय: प्रत्येक संध्या को ही एक अपूर्व छटा आ जाती थी। एक ओर बड़े–बूढ़े बैठे गप्पें लड़ाया करते थे और दूसरी ओर बालक हँसते कूदते इधर–उधर घूमते–फिरते थे।

अंग्रेजों का शासनकाल था अत: उनके बालक अधिक निडरता के साथ खेलते थे। वे प्राय: भारतीय बच्चों को मूर्ख बनाया करते और इससे आनन्द का अनुभव किया करते थे। ये अंग्रेज बालक पास से जाते किसी भी भारतीय बालक का पैर अपने जूते से दबा देते और फिर झट से शिष्टता दिखाते हुए कह देते– ''बेग योर पार्डन'' (क्षमा चाहता हूँ।) न जाने कितने दिनों से उनका यह खेल चल रहा था।

एक दिन उसी बाग की एक चौकी पर बैठे एक भारतीय बालक ने यह सब कुछ देखा तो उसका हृदय तिलमिला उठा।

''वे अंग्रेज हैं तो क्या? हम भारतीयों के भी तो जान है।'' उसने मन ही मन सोचा और फिर उठकर उन्हीं उद्दण्ड अंग्रेज बालकों की ओर चल पड़ा।

उन्होंने उसे देखा तो वे भी उसे मूर्ख बनाने के लिये उसकी ओर बढ़े। किन्तु इससे पहले ही कि उनमें से कोई भी उसके पैर पर अपना जूता रखता उसने ही एक अंग्रेज बालक के दो ठोकरें लगा दीं और फिर झट से कह उठा– ''बेग योर पार्डन।''

अंग्रेज बालकों की त्योंरियों में बल पड़ गये। एक भारतीय के द्वारा अपमानित होने का उनके जीवन में सम्भवत: यह पहला ही अवसर था। वे सभी उससे लड़ने के लिये तैयार होने लगे किन्तु जब उन्होंने देखा कि यह भारतीय बालक भी सामने ही उनसे मुकाबला करने के लिये तैयार खड़ा है तो वे भाग निकले और फिर उस दिन के पश्चात् उन अंग्रेज बालकों को किसी ने भी कम्पनी बाग में नहीं देखा।

अपने स्वदेश वासियों के सम्मान की रक्षा करने वाले इस बालक का नाम था मोतीलाल नेहरू– जिसने बड़े होकर भी अपने देश की स्वाधीनता के लिये अंग्रेजों से लोहा लिया कि उनके दाँत खट्टे हो गये। –

लालची गधा

– कुमुद कुमार

मोती पिल्ला और जैकी गधा आपस में गहरे मित्र थे। दोनों को गाँव के एक कुम्हार ने पाल रखा था।

एक दिन दोपहर को कुम्हार गहरी नींद में सोया था। तभी अचानक जैकी ने 'ढेंचू ढेंचू' चिल्लाना शुरू कर दिया। इससे कुम्हार की नींद टूट गयी। उसे जैकी के 'ढेंचू ढेंचू' करने पर बड़ा गुस्सा आया। उसने जैकी को डण्डा मारकर भगा दिया।

जैकी गाँव से बाहर आ गया। उसने मोती से कहा– ''मोती! चलो दोपहर में नदी की सैर कर आते हैं।''

मोती भी पक्का घुमक्कड़ था। वह नदी की सैर करने के लिए एकदम से तैयार हो गया। जब भी मोती और चैकी घूमने को निकलते थे, मोती जैकी की पीठ पर सवार हो जाता था।

आज भी मोती जैकी की पीठ पर सवार हो गया। पीठ पर सवार मोती जैकी को बताया करता था कि उसे दूर तक क्या दिखाई दे रहा है। लेकिन अभी तक मोती चुपचाप जैकी की सवारी कर रहा था। मोती को चुप देखकर जैकी ने कहा– ''मित्र मोती! बताओ न क्या–क्या दिखाई दे रहा है?''

''जैकी! आज तो बड़ा ही सुंदर दृश्य है। थोड़ी सी दूरी पर ही रामू किसान का हराभरा खेत है।''

''क्या रामू भी वहाँ दिखाई दे रहा है, मोती?''

''नहीं, रामू तो कहीं दूर–दूर तक भी दिखाई नहीं दे रहा है। दोपहर का समय है, वह घर पर आराम कर रहा होगा। लेकिन जैकी तुम यह क्यों पूछ रहे हो?''

''मोती! वास्तव में बात यह है कि मुझे बहुत जोर की भूख लगी है। तुम ठहरो, मैं रामू की फसल में दो–चार मुँह मारकर आता हूँ।''

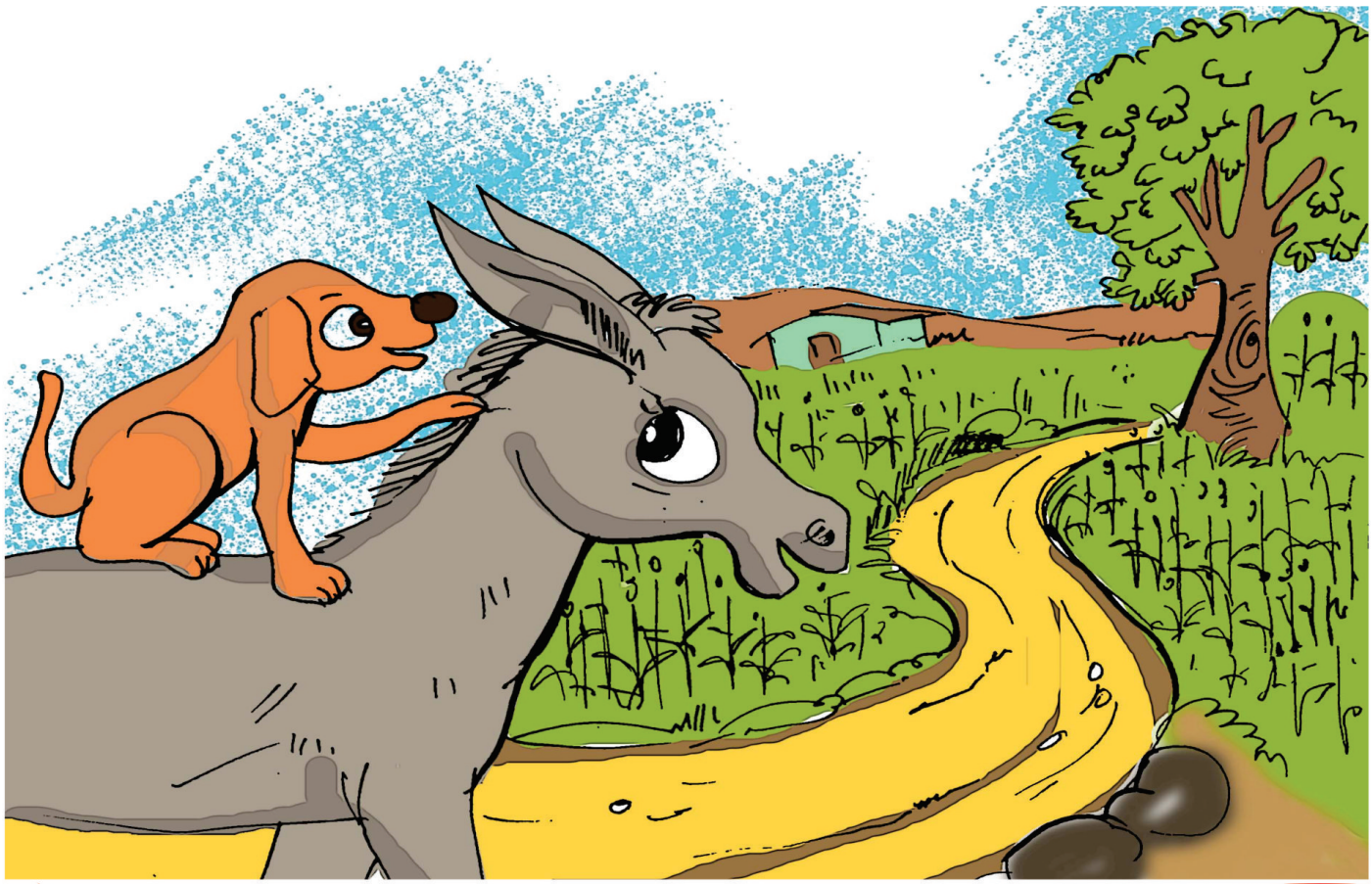

मोती ने जैकी को ऐसा करने से मना किया, किन्तु जैकी ने उसकी एक न सुनी। मोती उसकी पीठ से नीचे उतर गया।

जैकी रामू के खेत में घुसकर उसकी फसल चरने लगा। उसको फसल बड़ी स्वादिष्ट लग रही थी। मोती ने उसे चेताया– ''जैकी! तुमने दो–चार मुँह मारने की बात कही थी। लेकिन तुम तो रुकने का नाम ही नहीं ले रहे हो। लालच करना ठीक नहीं।''

''मोती! कहते तो तुम सही हो। लेकिन क्या करूँ, फसल है ही इतनी स्वादिष्ट।'' यह कहकर जैकी फिर से फसल चरने लगा।

जैकी स्वाद के लालच में इतनी फसल चर गया कि अब उसका चलना भी मुश्किल हो रहा था।

तभी मोती की ध्यान रामू पर गया। रामू एक मोटा डण्डा लिए दौड़ा चला आ रहा था। मोती ने कहा– ''जैकी! भागो। रामू आ गया। वह भी मोटा डण्डा लेकर।''

लेकिन जैकी का पेट इतना भर गया था कि वह तेज भागने के लायक ही न रह गया था। रामू ने उसकी डण्डे से खूब पिटाई की।

जैकी को समझ में आ गया था कि यह सब उसके लालच करने का परिणाम है।

रात भर डण्डे की चोट से उसका सारा शरीर दुखता रहा। जैकी ने शपथ ली कि आगे से वह न तो किसी किसान के खेत में घुसेगा और न ही लालच करेगा। उसने मोती से भी उसका कहना न मानने के लिए क्षमा माँगी।

– नजीबाबाद (उ. प्र.)

प्रेरक प्रसंग

सबसे बड़ा अपराध

– नितेश नागोता जैन

मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर रंगून की जेल में जीवन की अंतिम घड़ियाँ गिन रहे थे। उन्हें नारकीय यातनाएँ भोगते हुए देखकर एक सज्जन ने उनसे कहा– ''आपको यहाँ पर सभी प्रकार की असुविधाएँ हैं। जीवन में आप उन भव्य राजप्रासादों में रहे हैं, जहाँ पर हर प्रकार की सुख–सुविधाएँ थीं। आप यहाँ के जेल अधिकारी को सूचित करें कि यहाँ पर इतने–इतने कष्ट हैं।''

बादशाह ने कहा– ''जो अपराध मैंने किया है। उसका दण्ड मुझे भुगतना ही चाहिए। यदि इससे भी अधिक कड़ा दण्ड होगा तो वह भी मैं सहर्ष भोगूँगा।''

उस सज्जन ने पूछा– ''बादशाह! आपने ऐसा कौन सा अपराध किया है? जहाँ तक मुझे ज्ञात है आपने कोई अपराध नहीं किया है।''

बहादुरशाह जफर ने कहा– ''मैं बादशाह था। मेरा कर्तव्य था कि मैं देश की रक्षा करता पर मैं देश की चिन्ता किये बिना अपने हाल में मस्त रहा। समय के पूर्व मैंने दुश्मनों को ललकारा नहीं। यही मेरा सबसे बड़ा अपराध था जिसका दण्ड मैं भोग रहा हूँ।''

– भवानी मण्डी
(राजस्थान)

पत्र का प्रभाव

– श्यामसुन्दर गर्ग

इन्दौर की महारानी **देवी अहिल्याबाई होळकर** न्याय प्रिय शासक व शिव भक्त थी। पति व पुत्र के निधन के बाद राजसी ठाठ–बाठ त्यागकर प्रजा की सेवा में लीन रहने लगी।

पेशवा राघोबा ने दीवान गंगाधर यशवन्त चन्द्रचूड़ से साँठगाँठ कर अहिल्याबाई होळकर का राज्य हड़पने की योजना बनाई। उन्होंने इन्दौर के राजमहल का अपने सैनिकों से घेराव करा दिया।

अहिल्याबाई को पता चला तो वह तनिक भी विचलित नहीं हुईं। उन्होंने पेशवा को पत्र लिखा–

''श्रीमंत! मैं पति व पुत्र की मृत्यु हो जाने के शोक में विह्वल हूँ। क्या यह एक विधवा महिला के राज्य को हड़पने के लिए धर्म विरुद्ध व अनैतिक कार्य नहीं है?

यह ध्यान रखना कि मैं आतंकित होकर आत्मसमर्पण जैसा पाप कदापि नहीं करूँगी। भगवान शिव का स्मरण करते हुए रक्त की अंतिम बूँद तक आक्रमण का सामना कर प्राणोत्सर्ग करने को तत्पर रहूँगी।

आप अपनी अन्तरात्मा से विचार करें कि क्या इस धर्म विरुद्ध कार्य से अब तक सभी उपलब्धियाँ धूल में नहीं मिल जायेगी?''

पेशवा ने जैसे ही दूत द्वारा लाये पत्र को पढ़ा कि उसकी अन्तरात्मा धिक्कार उठी। उसने तुरन्त ही महल का घेराव हटा दिया।

महारानी अहिल्याबाई होळकर शांतचित्त होकर प्रजा कल्याण व भक्ति में पुन: लीन हो गईं।

– भीलवाड़ा (राजस्थान)

बूझो तो जानें

– राजेश गुजर

बच्चो, गणेशजी का यह रूप कितने शंखों से मिलकर बना है बताओ?

वादे का वादा

चित्रकथा : देवांशु वत्स

मिठास

– सुधा भार्गव

एक जंगल में हरे–भरे, ऊँचे–ऊँचे पेड़ थे। एक बार टिपटिपिया हारा थका– पेड़ के नीचे आन बैठा। उसे भूख भी लगी थी। उसने पेड़ से एक फल तोड़ा, चखा और फेंक दिया। बुरा सा मुँह बनाकर दूसरे पेड़ का फल चखा। नाक–भौं सिकोड़ता हुआ उसने उसे और भी दूर फेंक दिया। उसकी फेंका–फेंकी पर पेड़ों को बड़ा आश्चर्य हुआ। बाबा समान एक बड़े–बूढ़े पेड़ ने पूछा– ''भाई तुम हमारे फल खाते भी हो और दूर फेंककर उनका अपमान भी कर देते हो। भला हमने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है।''

''मेरे मुँह का सारा स्वाद बिगाड़ दिया और पूछते हो क्या बिगाड़ा है। तुम लंबे–चौड़े पेड़ों से क्या लाभ, जब तुम्हारे फल किसी की भूख ही न मिटा सकें। सारे के सारे फल कड़वे हैं कड़वे।''

''कड़वे!'' एक चीख निकली और पूरे जंगल में गूँज गई। पेड़ों ने अपने लिए इतना भद्दा शब्द आज तक न सुना था। ''हमारा तो जीवन ही व्यर्थ हो गया, जब किसी की भलाई ही न कर पाए।'' एक पेड़ दुखी होकर बोला। ''मीठा कैसे बनें।'' इसी उधेड़बुन में कई महीने बीत गए। न पेड़ जी खोलकर हँस पाए न ठीक से सो सके। हमेशा उनकी आँखें रास्ते पर बिछी रहती– ''काश, कोई हमें ऐसा मिल जाए जो मीठा बनने का गुर सिखा दे।''

भारी दोपहरी में एक दिन उड़ते–उड़ते काली कोयल उस जंगल में पेड़ की टहनी पर आ बैठी और कुहू....कुहू करके मिश्री सा गाना कानों में उडेलने लगी। सारे पेड़ खुशी से झूमने लगे। गर्मी की तपन भूलकर बहुत दिनों बाद मुस्कराए।

अचानक थू–थू की आवाज सुनकर वे मुस्कराना भूल गए। उन्होंने सुना, ''हाय रे! मेरा मुँह तो कड़वा हो गया। लगता है कड़वाहट यहाँ की हवा में घुली है। उफ्, गाया भी नहीं जा रहा। थोड़ी देर और

यहाँ रुकी तो मेरा गला ही बैठ जाएगा। उड़ूँ यहाँ से... तो ही अच्छा है।''

उसने नीले आकाश में उड़ने को पंख फड़फड़ाए ही थे कि सारे पेड़ हाथ जोड़कर खड़े हो गए, टपटप आँसू बहाने लगे। बोले– ''कोयल बहन! हमें छोड़कर मत जाओ। हम तुमसे मीठा होना सीखेंगे।''

''तुम सब बहुत कड़वे हो। तुम्हारे साथ रहकर मैं भी कड़वी हो जाऊँगी। भूल जाऊँगी मधुर बोल।''

''यह भी तो हो सकता है, तुम्हारा साथ पाकर हमारे फलों में मिठास पैदा हो जाए। जो भी हमारा फल खाता है, बुरा–भला कहता कोसों दूर चला जाता है।''

''हाँ, तुम्हारी बात सच भी हो सकती है। तो ठीक है कुछ दिन यहीं रह जाती हूँ।'' कोयल को उन पर दया आ गई।

सबेरे–सबेरे कोयल ने गाना शुरू किया। ठंडी हवा बहने लगी, आने जाने वालों के कानों में मधुर घंटियाँ बजने लगीं। फलों की रंगत बदल गई। हरे से पीले हुए गालों पर गुलाबीपन छा गया। रसीले फलों से

डालियाँ झुक गईं। उनकी सुन्दरता को देखकर छोटे–बड़े हाथ उन्हें छूने और सहलाने को मचलने लगे। एक फल खाते दूसरा तोड़ने की सोचते। आँधी आई तो टपाटप फल नीचे गिरने लगे। बच्चे बूढ़े टोकरी लेकर दौड़े। खाते–बाँटते कहते–ऐसा शहद–सा मीठा फल कभी न देखा न चखा। पेड़ अपने फलों की प्रशंसा सुनकर नाचने लगे। पत्तियाँ हिल–हिलकर कहतीं–

आओ रे भैया आओ रे।
जी भर आम खाओ रे।।

सुनने वालों ने समझा– **''जी भर आम खाओ।''**

तब से उन रसीले फलों को आम कहा जाने लगा– कोयलिया के गले की मिठास से फल मीठे हो गए और उनकी सुगंध हवा में घुल गई। कोयल को गाने में अब आनंद आने लगा। वह उन पेड़ों को छोड़कर कहीं नहीं गई। आज तक कोयल आम के पेड़ पर बैठकर ही अपने मधुर गान की तान छेड़ना पसंद करती है।

– बैंगलूरू (कर्नाटक)

प्यारा मटका

– अखिलेश जोशी
बड़वाह (म. प्र.)

गोल मटोल सुंदर प्यारा मटका।
गर्मी में भी दे रहा है ठण्डाई का झटका।।
सभी प्यासों की प्यास बुझाता है।
देता राहत, गर्मी में ठण्डक लाता है।।
भेदभाव किसी में ये नहीं करता।
हर मानव की जल सेवा यह करता।।
हर इंसान पर अपनी प्रीत लुटाए।
सभी को यह ठण्डा पानी पिलाए।।
काला–पीला हर रंग में ये सजता।
कितना सुंदर लगता है प्यारा मटका।।
बीच बाजार में यह सरेआम बिकता है।
छोटा हो या बड़ा हर कोई इसे रखता है।।
कुम्हार के चाक पर सुंदरता में ढलता।
माटी से बना, एक दिन, माटी में ही मिलता।।

प्रकाश यहाँ है

– सुभाष बुड़ावनवाला

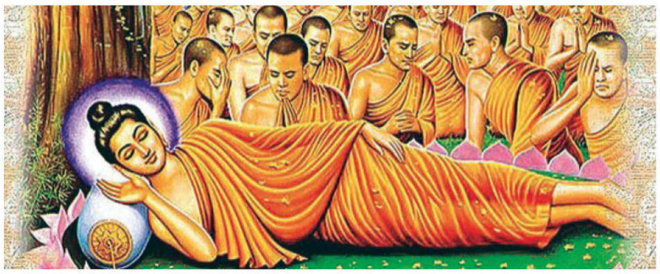

भगवान बुद्ध मृत्युशय्या पर पड़े थे पास ही शिष्य आनंद सेवारत था। तभी उनके कानों में रोने की आवाज पड़ी तो उन्होंने पूछा– ''आनंद कौन रो रहा है?'' आनंद ने कहा– ''भंते! भद्रक आपके अंतिम दर्शन के लिये आया है।''

''तो उसे मेरे पास बुलाओ।'' बुद्ध ने कहा।

आते ही भद्रक फूट–फूटकर रोने लगा। बुद्ध ने रोने का कारण पूछा। ''भंते! जब आप नहीं होंगे, तब हमें प्रकाश कौन दिखाएगा?'' भद्रक आर्द्र स्वर में बोला। बुद्ध ने उपदेश दिया– ''भद्रक! प्रकाश तुम्हारे अंदर है। इसे बाहर खोजने की आवश्यकता नहीं। जो इसे देवालयों, तीर्थों, पर्वतों में भटककर खोजने की चेष्टा करते हैं वे अंत में निराश होते हैं। इसके विपरीत मन–वचन–काया से एकनिष्ठ होकर साधनारत जनों का अंत:करण स्वयं दीप्त हो उठता है। **अप्प दीपो भव** अपने दीपक आप बनो।''

– खाचरौद (म. प्र.)

पुस्तक परिचय

शिशु गीत-सलिला- यह एक विशिष्ट शिशु गीत संकलन है जिसे बालसाहित्य के मूर्द्धन्य साहित्यकार श्री कृष्ण 'शलभ' अत्यन्त परिश्रमपूर्वक संपादित कर रहे थे। उनके संपादित बाल काव्य संकलन 'बचपन एक समंदर' को बाल साहित्य जगत ने सर आँखों पर धारण किया। एक हजार शिशु गीतों के संकलन के इस महत् संकल्प को पूरा करते-करते ही क्रूर काल ने उन्हें हमसे असमय ही छीन लिया।

उनके इस महत्वपूर्ण संकल्प को पूरा करने का दायित्व निर्वाह किया डॉ. आर. पी. सारस्वत ने वरेण्य बाल साहित्य मनीषी डॉ. प्रकाश मनु ने इस कार्य में हृदयपूर्वक अपार सहयोग किया और इस प्रकार २०७ रचनाकारों के १००८ शिशु गीतों का यह विशाल कोश हमारे लिए प्रकाशित हुआ। निश्चय ही यह बाल साहित्य जगत में एक चिर स्मरणीय, चिर संग्रहणीय और अत्यंत उपादेय ग्रंथ सिद्ध होगा।

प्रकाशक- नीरजा स्मृति बाल साहित्य न्यास एन-१६७-१६८, पैरामाउण्ड ट्यूलिप दिल्ली रोड, सहारनपुर-२४७००१ (उ. प्र.) मूल्य ६००/-

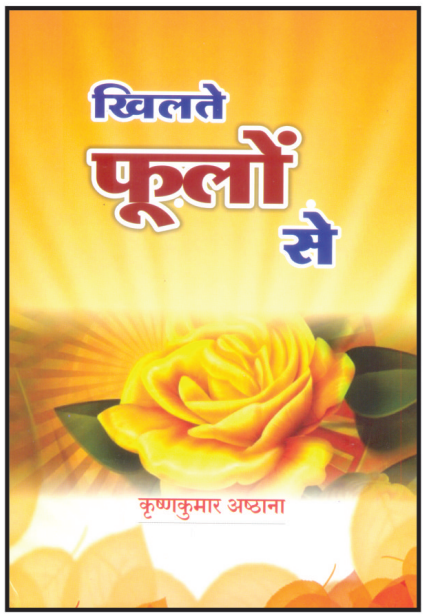

खिलते फूलों से- खिलते फूलों से बाल साहित्य में एक अपने प्रकार की विशिष्ट कृति है। 'देवपुत्र' के प्रधान संपादक श्री कृष्णकुमार अष्ठाना वर्षों से देवपुत्र के संपादन के माध्यम से बाल साहित्य जगत में संस्कारों एवं राष्ट्रभक्ति की अलख जगा रहे हैं। देवपुत्र पत्रिका के निरंतर प्रकाशन से चार दशकों से अधिक समय में अपनी प्रसारण संख्या एवं सामग्री के कारण देवपुत्र आज बाल जगत में सुपरिचित नाम है। देवपुत्र का एक वैशिष्ट्य उसके श्री अष्ठाना की कलम से निकले वे संपादकीय भी हैं जो बच्चों ही नहीं बड़ों को भी समान रूप से प्रिय होते हैं।

देश, संस्कृति, पर्व, त्यौहार, प्रेरक महापुरुष, स्वतंत्रता के महानायक एवं अनेक सामयिक महत्व के विषयों पर अनुभवी संपादक के संपादकीय लेख पढ़ने पर सदैव तरोताजा प्रतीत होते हैं। कुछ वर्षों पूर्व इन संपादकीय लेखों का एक संकलन इसी नाम से प्रसिद्ध हुआ। प्रस्तुत संकलन उसी का परिवर्द्धित एवं परिष्कृत संस्करण है। इन लेखों का महत्व इस बात से भी आंका जा सकता है कि 'वीणा' जैसी सुप्रसिद्ध एवं सुस्थापित हिन्दी साहित्य की पत्रिका ने 'बाल वीणा' स्तंभ के रूप में भी धारावाहिक इनका प्रकाशन किया था। निश्चय ही यह चिरकाल तक संजोए रखने योग्य एक प्रेरक संग्रह है।

प्रकाशन- साहित्य भण्डार, ५० चाहचंद, इलाहाबाद। मूल्य- १६०/-

छः अंगुल मुस्कान

एक आधुनिक युवती से एक पत्रकार ने पूछा– ''क्या आप बता सकती हैं कि रसोईघर को साफ-सुथरा कैसे रखा जा सकता है?''

युवती– ''होटल में खाना खाकर।''

–सुमन अग्रवाल, नई दिल्ली

शिक्षक– सबसे मीठे फल तथा सबसे कड़वे फल का नाम बताओ?

सोहन– आचार्यजी, एक ही फल किसी को मीठा लगता है और किसी को कड़वा।

शिक्षक– ऐसा नहीं हो सकता। वह कौन सा फल है?

सोहन– परीक्षा फल।

– अनंत सिंह, जमशेदपुर (झारखंड)

आगंतुक ने अतिथि से पूछा– आप चाय लेंगे या ठंडा?

अतिथि ने शालीनता से उत्तर दिया–चलिए चाय बनने तक ठंडा ही मंगवा लीजिए।

– शीला शर्मा, लखनऊ

एक ग्राहक ने अपने दुकानदार मित्र से पूछा– आप अपनी दुकान में केवल विवाहित लोगों को ही बतौर कर्मचारी रखते हैं। इसक क्या कारण है?

दुकानदार ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया–क्योंकि उनकी पत्नियाँ उन्हें आज्ञाकारी बना चुकी होती हैं।

– रीता अग्रवाल, कानपुर

महिला (दुकानदार से)–एक आइना देना।

दुकानदार–हाथ का या टांगने का? अरे हाथ तो मैं ऐसे ही देख लेती हूँ। मुँह देखने का दो।

– मोहित श्रीवास्तव, मुम्बई

बाल साहित्य समाचार

भोपाल की महिला साहित्यकारों की प्रतिष्ठित संस्था, **'हिन्दी लेखिका संघ मध्यप्रदेश भोपाल'** ने अपने २६वें अखिल भारतीय कृति पुरस्कार एवं सम्मान समारोह में संघ द्वारा स्थापित साहित्यकार सम्मान, सारस्वत सम्मान सहित देश के विभिन्न प्रदेशों से कृति पुरस्कार प्रतियोगिता में चयनित कुल २४ महिला साहित्यकारों को सम्मानित किया। भोपाल के हिंदी भवन प्रांगण में स्थित पं. रविशंकर शुक्ल भवन में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पद्मश्री किशन तिवारी, सारस्वत अतिथि श्री कैलाशचंद पंत एवं कार्यक्रम अध्यक्ष श्रीमती विनय राजाराम ने कटनी नगर की सुपरिचित साहित्यकार कवयित्री, कथाकार, बाल साहित्यकार, **डॉ. सुधा गुप्ता 'अमृता'** को उनके यात्रा वृत्तांत कृति **'चलें भ्रमण की ओर'** के लिये श्री अरुण भार्गव स्मृति पुरस्कार स्वरूप शाल, श्रीफल, प्रशस्ति पत्र एवं सम्मान निधि प्रदान की।

आओ, आओ खेलें खेल

चाँद मोहम्मद घोसी, मेड़ता सिटी (राज.)

नई दिशा

– सुमन बाजपेयी

''आज तुम पूरे कालांश खड़ी रहोगी, इतनी बार कहने पर भी तुम गृहकार्य करके नहीं ला रही हो।'' इतिहास पढ़ाने वाली दीदी ने सुनीता की ओर नाराजगी से देखते हुए कहा। पिछले चार दिन से लगातार ऐसा ही हो रहा था। मैं स्वयं हैरान थी यह सोचकर कि आखिर सुनीता गृहकार्य करके क्यों नहीं ला रही है। वह तो हमेशा ही पढ़ने में भी होशियार रही है और कभी ऐसा नहीं हुआ था कि उसका काम पूरा न हो। लगभग डेढ़ वर्ष बाद वैसे ही अब जाकर विद्यालय खुले हैं। सबको दूर-दूर बैठाया जाता है ताकि रोग (वायरस) से बचाव हो सके। मास्क पहनकर विद्यालय आते हैं और सैनेटाइजर का भी प्रयोग करते हैं। हालांकि अभी केवल दसवीं और बारहवीं के लिए विद्यालय खुले हैं और प्रत्येक कक्षा के छात्रों को दो भागों में बाँटकर दो अलग-अलग कमरों में बैठाया जा रहा है। छात्रों के साथ-साथ विद्यालय वाले भी सुरक्षा का पूरा ध्यान रख रहे हैं। उस समय तो मैं कुछ पूछ नहीं पाई, क्योंकि प्रत्येक छात्र की डेस्क दूसरे छात्र से दूर लगी थी।

''सुनीता, क्या बात है?'' मध्याह्न भोजन में मैंने उससे पूछा। हालांकि तब भी हम दूरी बनाकर ही बैठे थे।

''कुछ नहीं!'' उदास स्वर में उसने कहा। मैं उससे और बात करना चाहती थी कि तभी और लड़कियाँ वहाँ आ गईं।

मुझे यह ते अनुभव हो रहा था कि विद्यालय खुलने के बाद से वह कुछ अधिक ही गुमसुम रहने लगी है। वरना पहले तो हमेशा चहकती रहती थी। उसके चुटकुलों पर सब उसे घेरे रहते थे।

''इस शनिवार को हम लोग पिकनिक मनाने के लिए सूरजकुंड जाएँगे। बहुत से छात्रों की माँग है। चाहे वायरस पर काबू पा लिया गया है फिर भी सब पूरी तरह से सुरक्षा का ध्यान रखेंगे। कल तक उसके लिए ३०० रुपये जमा करा दें।'' कक्षा अध्यापक जो उन्हें हिन्दी पढ़ाती थीं, वे कक्षा से बाहर जाते ही पूरी कक्षा में शोर मच गया। सब प्रसन्न थे।

''कितने दिनों बाद घूमने जाएँगे।'' हर कोई उत्साहित था और प्लान बनाने में टोलियाँ बनाकर जुट गए थे कि कौन क्या करेगा, क्या लाएगा। कोरोना के कारण से सब घर में बैठे-बैठे इतना उकता गए थे कि विद्यालय आने से घबराने वाले बच्चे भी विद्यालय आकर प्रसन्न थे। लेकिन सुनीता उदास बैठी हुई थी।

''तुम्हें पिकनिक पर जाने की बात सुनकर प्रसन्नता नहीं हुई?'' अब मैं वास्तव में चिंतित हो गई थी। इससे पहले कब ऐसा हुआ था कि पिकनिक पर जाने या शहर से बाहर ट्रिप पर जाने के लिए उसने सबसे पहले पैसे न जमा करवाएँ हों या तैयारियाँ करने के लिए शोर न मचाया हो।

''मैं पिकनिक पर नहीं जाऊँगी।'' ऐसा लग रहा था कि वह अभी रो पड़ेगी।

''पर क्यों? तुम्हारा स्वास्थ्य तो ठीक है न?''

''मानसी, इस समय ३०० रुपए देना मेरे लिए संभव नहीं है।'' उसने थोड़ा हिचकिचाते हुए कहा था।

मुझे अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। मुझे पता था कि उसके पिताजी एक प्राइवेट कंपनी में अच्छे पद पर काम करते थे और पैसे की कमी नहीं थी।

''पर क्यों?'' विद्यालय की बस में मैं उसके साथ ही सीट पर बैठ गई थी।

''कोरोना महामारी फैली तो सबको ही आर्थिक परेशानियों से जूझना पड़ा। पिताजी की कंपनी भी बंद हो गई। उस समय दूसरी मिलना कहाँ

संभव था। जितनी भी उनकी बचत थी, वह धीरे–धीरे समाप्त हो गई। माँ ऑनलाईन ट्यूशन और कला की कक्षाएँ ले रही हैं, फिर भी निर्वाह करना आसान नहीं है। मेरा और छोटे भाई का विद्यालय शुल्क और अन्य खर्चे बहुत कठिन है सब की व्यवस्था करना। गृहकार्य तो तभी करूँगी न जब कॉपी होगी। पुरानी कॉपी उपयोग करूँगी तो दीदी गुस्सा होंगी। पिताजी ने कहा कि वह ले आएँगे एक–दो दिन में। माँ–पिताजी दिन–रात परेशान रहते हैं और मैं उनकी कोई मदद भी नहीं कर पा रही हूँ। मुझे यह भी नहीं पता कि मैं कितने दिनों तक विद्यालय आ पाऊँगी।''

''परेशान मत हो, अब तो परिस्थिति बदल गई है। धीरे–धीरे चीजें ठीक हो रही हैं। तुम्हारे पिताजी को शीघ्र ही नौकरी मिल जाएगी।'' मैंने उसे सांत्वना देने का प्रयास किया।

''जब तक नहीं लगती तब तक क्या होगा? काश मैं उनकी किसी प्रकार मदद कर पाती। कम से कम इतनी कि अपने खर्चों के लिए उनसे पैसे न माँगने पड़ें।'' वह बस से उतरते–उतरते बोली।

घर आकर भी मैं उसी के बारे में सोचती रही। माँ से भी बात की तो उन्होंने कहा कि वह उसकी आर्थिक सहायता कर देंगी। मैं जानती थी कि सुनीता मदद नहीं लेगी। तभी दिमाग में एक विचार आया।

''सुनीता! तेरी माताजी अलग–अलग प्रकार के व्यंजन बनाना जानती हैं। तू कितने प्रकार के व्यंजन लाया करती थी। उनसे बोल कि टिफिन सेवा (सर्विस) प्रारंभ कर लें।''

''यह इतना आसान नहीं है। आदेश (ऑर्डर) कहाँ से मिलेंगे?'' सुनीता ने मायूसी से कहा।

''दीदी बता रही थीं कि कुछ दिनों बाद विद्यालय में एक मेले का आयोजन करने की योजना बन रही है। बहुत बड़े स्तर पर नहीं, क्योंकि विद्यालय चाहता है कि बच्चे इस महामारी के समय को भूलकर

फिर से अपनी दिनचर्या में लौट आएँ। इसलिए खेल के साथ–साथ स्टॉल भी लगेंगे। एक स्टॉल में हम तेरी माँ के हाथ से बने व्यंजन रखेंगे। यहाँ तो बिक्री होगी ही साथ ही अपना विज्ञापन छपवाकर बाँटेंगे और विद्यालय में भी बच्चों से बात करेंगे। और तू चाहे तो इसका सारा खर्च मेरी माँ उठा लेंगी।''

''नहीं!'' सुनीता ने दृढ़ता से कहा।

सुनीता की माँ के हाथ के बने पकवान सबको इतने पसंद आये, कि उन्हें बहुत सारे आदेश (ऑर्डर) मिल गए। किसी ने उन्हें अपने जन्मदिन पर चीजें बनाने का आदेश (ऑर्डर) दिया तो किसी ने टिफिन सेवा शुरू कर ली। धीरे–धीरे उनका भोजन इतना पसंद किया जाने लगा कि किटी पार्टी और अन्य आयोजनों के लिए भी उनसे संपर्क किया जाने लगा। समय लगा, पर स्थितियाँ सामान्य होने लगीं। सुनीता प्रसन्न रहने लगी थी और पढ़ाई में भी पूरा ध्यान देने लगी थी। मजे की बात तो यह थी कि वह स्वयं भी नये–नये व्यंजन बनाने लगी थी। एक बहुत ही सुंदर केक बनवाकर उसने मानसी को दिया। उस पर लिखा था– ''धन्यवाद मेरी सहेली! मुझे एक नई दिशा दिखाने के लिए।''

– रोहिणी दिल्ली

बड़े लोगों के हास्य प्रसंग

श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' पौलेण्ड की यात्रा पर थे। वहाँ उनके सम्मान में वारसा विश्वविद्यालय में एक कवि सम्मेलन हुआ।

सम्मेलन में इंग्लैण्ड के कवि 'ला री ली' भी भाग ले रहे थे। उन्होंने अपनी कविता 'बाम्बे अराइवल' (मुम्बई आगमन) जिसमें अंग्रेजों के भारत आगमन का वर्णन था, पढ़ी।

कविता पढ़कर वे दिनकर जी की ओर देखने लगे। दिनकर जी ने तुरंत कहा– ''मिस्टर ली! अब आप एक दूसरी कविता 'बाम्बे डिपारचर' (मुम्बई से पलायन) भी लिख लें।

क्योंकि अंग्रेज भारत से भाग चुके हैं।''

जानकारी

दिखावे के दाँत

– अंकुश्री

दाँत का उपयोग भोजन चबाने में होता है। बोलते समय इससे स्वर भी नियंत्रित होता है। लेकिन कुछ प्राणियों में ऐसे दाँत होते हैं। जिनका प्रयोग भोजन चबाने या स्वर नियंत्रित करने में नहीं होता। ऐसे दाँत दिखावे के लिये होते हैं। हाँ, आत्मरक्षा में ऐसे दाँतों का उपयोग अवश्य होता है।

दिखावे के दाँत अनेक जानवरों में पाये जाते हैं, मगर आमतौर पर यह हाथी में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। मुँह के अंदर भोजन चबाने के लिये आवश्यक दाँतों के अतिरिक्त भी सूँड के अगल–बगल हाथियों को दो दाँत निकले होते हैं। ये दाँत काफी लम्बे, मजबूत और भारी होते हैं। कभी–कभी इन दाँतों की लम्बाई दो मीटर से भी अधिक हो जाती है। इनका वजन लगभग ५० किलोग्राम तक हो जाता है।

सुअर को भी बाहरी दाँत होते हैं। सुअर को वराह भी कहा जाता है। पौराणिक कथानुसार वराह अवतार में भगवान ने पृथ्वी को अपने बाहरी दाँतों पर लेकर उसे जलमग्न होने से बचाया था। सुअर में भी हाथियों की तरह केवल नर में ही बाहरी दाँत पाये जाते हैं। सुअर अपने इन दाँतों से मिट्टी कुरेदते फिरता है। दाँतों और थुथून से जमीन के अंदर दबी जड़ें और कीटों को निकालना इसकी आदत है। नर सुअर के दाँत भी कुछ बड़ा होने पर उगते हैं और धीरे–धीरे बढ़ते जाते हैं। मादा सुअर को बाहरी दाँत होते हैं, मगर हथिनी की तरह ही वे अविकसित आकार के होते हैं।

हिरणों में कस्तूरी मृग को उसके कस्तूरी के कारण विशेष स्थान प्राप्त है। यह बर्फीले क्षेत्रों में अधिक पाया है। इसके जबड़े में भी बाहरी दाँत की तरह की दो संरचनाएँ निकली होती है।

समुद्र में अनेक प्रकार के व्हेल पाये जाते हैं। एक प्रकार के समुद्री व्हेल को भी बाहरी दाँत होता है। लेकिन उसे केवल एक ही बाहरी दाँत होता है। जो उसके मुँह के ऊपर सीधा उगा होता है। उसके दाँत की लंबाई तीन मीटर तक पहुँच जाती है। व्हेल का दाँत गैंडे की तरह दिखता है। मगर गैंडे को दाँत नहीं होता है। उसके मुँह पर उगी आकृति सींग है।

दाँत केवल स्तनपायी जानवरों की विशेषता है। इसलिये दिखावे के दाँत भी स्तनपायियों में ही पाये जाते हैं।

– राँची (झारखण्ड)

प्रकृति के मित्र-कीड़े-मकौड़े

सचित्र जानकारी-
संकेत गोस्वामी

कीड़ों- मकौड़ों को आम तौर पर प्रकृति का निम्नस्तरीय जीव समझा जाता है। किन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है। उनमें से अनेक ऐसे हैं जो प्रकृति पर बड़ा उपकार करते हैं। उदाहरण के लिए वे पृथ्वी पर मरे हुए पशुओं के गले-सड़े अवशेषों को खाकर हमारे आसपास के वातावरण को साफ तथा प्रदूषण मुक्त रखने में सहायता करते हैं।

ये जीव हमारी गलियों, खेतों तथा जंगलों को स्वच्छ रखने में भी सहायता करते हैं। भ्रमरों (बीटल्स) की एक प्रजाति ऐसी भी है जो काफी साफ-सुथरी तथा व्यवस्थित होती है। वे जैसे ही किसी मृत जीव को देखती हैं, तुरंत एक छोटा-सा गड्ढा खोद कर उसे उसमें दबा देती है। उसके बाद वे अपने मित्रों तथा रिश्तेदारों को दावत पर निमंत्रित करते है तथा इकट्ठे होकर खाने का मजा उठाते हैं।

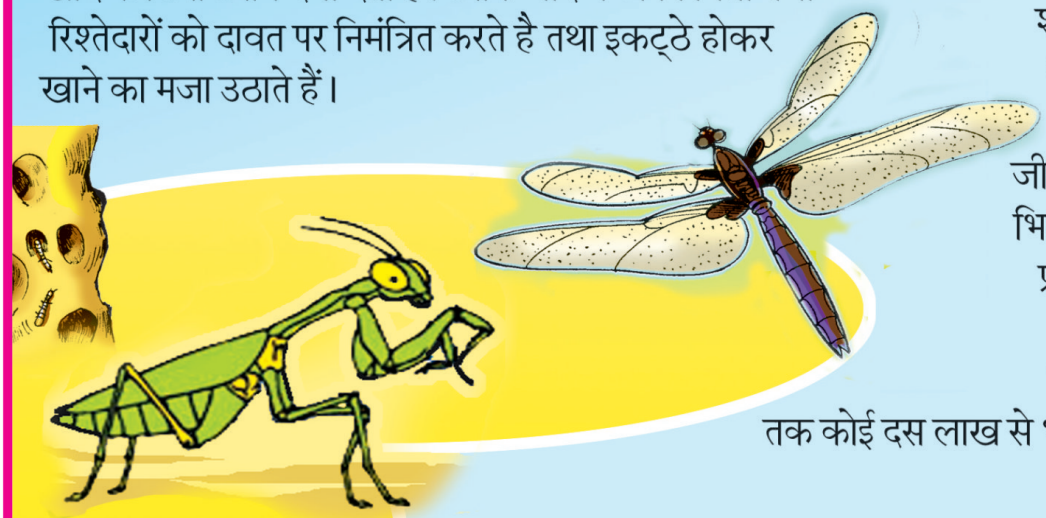

अधिकतर कीटों की आंखें संयोजित होती हैं तथा उनके पंखों के दो जोड़े होते हैं। पंखों को उड़ने, साथी को आकर्षित करने और शत्रुओं को दूर भागने के काम में लिया जाता है। कीड़े-मकौड़े जीवित जीवों की सबसे बड़ी तथा भिन्नतापूर्ण श्रेणी बनाते हैं। प्रकृति के वातावरण को साफ रखने वाले इन कीड़े-मकोड़ों की अब तक कोई दस लाख से भी ऊपर प्रजातियां जान ली गई हैं।

विश्व में शायद ही कोई ऐसा स्थान होगा जहां ऐसे जीव नहीं पाए जाते हों। वे अच्छे तरह के कार्य करते हैं। उनके द्वारा किए जाने वाले कार्यों में साफ-सफाई रखना सबसे महत्वपूर्ण कार्य हैं।

आखिर क्या होता है शार्ट सर्किट

– डॉ. विभा खरे

सामान्यत: भयंकर अग्निकाण्डों का कारण शार्ट–सर्किट बताया जाता था। आखिर शार्ट–सर्किट होता क्या है ? जिससे सभी बड़ी–बड़ी इमारतें, भवन या बाजार क्षणभर में फुँककर राख के ढ़ेर में बदल जाते हैं।

शार्ट–सर्किट की घटनाएँ गर्मियों के दिनों में अधिक होती हैं।

सामान्यत: शार्ट–सर्किट की ये घटनाएँ गर्मियों के दिनों में ही होती हैं, क्योंकि इन दिनों बिजली की खपत उसी अनुसार बढ़ जाती है। कूलर, पंखे, रेफ्रीजरेटरों एवं एयरकंडीशनरों आदि के लगातार चलते रहने के कारण विद्युत आपूर्ति के ऊपर अतिरिक्त भार (लोड) पड़ना शुरू हो जाता है। इस तरह उपभोक्ता अपनी स्वीकृत खपत के मुकाबले अधिक बिजली का उपयोग करते हैं। बिजली के इस अतिरिक्त उपयोग के कारण कंडक्टर्स, तार प्लग और सर्किट अधिक गर्म हो जाते हैं। इन सबमें गर्म होने का असर 'इन्स्युलेशन' पर पड़ता और 'इन्स्युलेशन' पिघल जाता है। 'इन्स्युलेशन' के पिघलने का परिणाम होता है 'आग'। 'आग' जो बहुमंजिला इमारत, बाजार, झुग्गी झोपड़ी किसी को भी नहीं छोड़ती।

दूसरी ओर बिजली की अधिक खपत के कारण बिजली के उपकरण भी गर्म हो जाते हैं और आग की चिंगारी निकलने लगती है। यही चिंगारी भयंकर अग्निकाण्डों का कारण बनती है।

शार्ट–सर्किट से बचने के लिए उपाय

वास्तव में आग की इन दुर्घटनाओं के लिए जहाँ विद्युत कर्मचारी दोषी होते हैं वही जाने–अनजाने आप और हम भी इन दुर्घटनाओं को बुलावा देते हैं। अत: आम आदमी को भी तो बिजली द्वारा उत्पन्न शार्ट–सर्किट से बचने के लिए कुछ उपाय करने चाहिए जैसे– बिजली फिटिंग के समय ध्यान रखें कि तार तांबे का ही उपयोग हो। सस्ते के लोभ में अल्युमीनियम की तारों का उपयोग कभी न करें।

हमेशा नकली उपकरणों से बचें

समय–समय पर घर के तारों की जाँच करते और करवाते रहें, जिससे 'इन्स्युलेशन' के चटखने से पहले ही पता चल जाए।

हमेशा क्वालिटी–कन्ट्रोल और सुरक्षा परीक्षणों से निकले हुए उपकरण ही खरीदें और नकली उपकरणों से बचें।

घर से जाते समय मेन–स्विच को अवश्य बंद करें

रेडियो, टी. वी. आदि को बंद करने के बाद साकेट का बटन बन्द करना न भूलें क्योंकि ये भी शार्ट–सर्किट को निमन्त्रण दे सकते हैं। लम्बे समय के लिए घर से जाते समय मेन–स्विच अवश्य बंद कर दें।

हमेशा तीन प्लग वाले उपकरणों का ही उपयोग करें क्योंकि ये झटके (शॉक) से बचाने में अधिक सुरक्षा देते हैं।

कभी न करें टूटे प्लग का उपयोग

टूटे प्लग का उपयोग कभी न करें। नंगी तारों को कभी भी साकेट में न घुसाएँ। नंगी तारें साकेट में डालने से चिंगारी निकलती हैं जो कभी भी आग का कारण भी बन सकती हैं।

लगातार न चलाए एक ही उपकरण को

एक ही उपकरण को लगातार न चलाएं। बीच–बीच में कुछ समय के लिए बन्द करके इन्स्युलेशन को ठंडा होने दें।

अब आप जान ही गये होंगे कि शार्ट–सर्किट कैसे होता है ? छोटी सी भूल और लापरवाही के कारण बड़ी दुर्घटनाओं से बचें और आज ही अपने घर के प्लगों, साकेटों और वायरिंग की जाँच करके खराब चीजों को तुरन्त बदलकर सुरक्षा पायें।

– झाँसी (उ. प्र.)

प्रतिभा का सम्मान

– शिव मोहन यादव

मुस्कान ८ वर्ष की है। पढ़ने में हमेशा प्रथम रही है। सभी विषयों में होशियार है। खेलकूद में भी सदैव प्रतिभाग करती है और विजेता रहती है। उसके सभी अध्यापक और दीदी उसे बहुत पसंद करते हैं। किन्तु वह सभी की लाड़ली है।

वह गरीब परिवार से है। उसके घर में माँ–पिताजी और छोटा भाई है। पिताजी मेहनत–मजदूरी से जो कमाकर लाते हैं, उसी से उनका घर चलता है। एक दिन उसके पिताजी बीमार हो गये। मुस्कान विद्यालय नहीं जा पाई। देखा, पिताजी को बहुत तेज बुखार है। माँ ने मुस्कान से कहा– ''बिटिया! इतने पैसे तो हैं नहीं कि डॉक्टर को दिखाया जा सके। ये पैसे लो, और दवाई की दुकान ने बुखार की दवाई ले आओ।''

''लेकिन माँ! हमारे अध्यापक कहते हैं कि चिकित्सक को दिखाये बिना दवा नहीं लेनी चाहिए।'' मुस्कान ने माँ से कहा। माँ बोलीं–''अरे बिटिया! हमारे पास इतने रुपये भी तो होने चाहिए, कि चिकित्सक का शुल्क दे सकें। तुम जाओ और दवाई ले आओ, वे ठीक हो जाएंगे।''

मुस्कान ने रुपये लिए और औषधी भंडार से दवाई ले आई। दवाई लेने के बाद भी उसके पिता का स्वास्थ्य ठीक नहीं हुआ। संध्या तक उनकी हालत और खराब हो गई। उसकी माँ बोलीं– ''बिटिया! अब तो इनका स्वास्थ्य और बिगड़ता जा रहा है, अब बिना चिकित्सक के कैसे ठीक होंगे?''

''माँ! अब तो सरकार सभी चिकित्सालयों में निशुल्क दवाई देती है। क्या हम लोग वहाँ पिताजी का उपचार नहीं करा सकते?'' मुस्कान ने पूछा।

''किन्तु बिटिया! अब संध्या हो गई है, चिकित्सालय बंद हो गये होंगे।''

''हमारे अध्यापक बताते हैं कि आपात स्थिति में २४ घण्टे उपचार होता है।'' ''लेकिन वहाँ ले कौन जायेगा? हमारे पास तो कोई वाहन भी नहीं है।'' ''माँ सरकारी रोगी वाहन (एम्बुलेंस) आता है न।''

''बेटी! कौन करेगा फोन? और रोगी वाहन (एम्बुलेंस) आयेगा भी कि नहीं। वहाँ उपचार हो भी पायेगा कि नहीं।'' ''हाँ माँ! बात तो सही है, किन्तु उपचार कैसे होगा?'' ''कोई दूसरा उपाय सोचो।''

मुस्कान थोड़ी उदास हो जाती है। कुछ देर विचार करती है और फिर वहाँ से चल देती है। कुछ ही देर में वह एक चिकित्सक के पास पहुँच गई और बोली– ''मेरे पिताजी बहुत बीमार हैं, उन्हें बुखार है। मेरे पास रुपये तो नहीं हैं, लेकिन मेरा ये स्वर्ण पदक है। ये मुझे कक्षा तीन में प्रथम आने पर मिला था। आप कहेंगे, तो अपना दूसरा पदक भी दे दूँगी, जो मुझे खेलों में मिला था। बस आप मेरे पिताजी को ठीक कर दीजिए।''

मुस्कान की बात सुनकर चिकित्सक सन्न रह गये। समझ गये, ऐसी अनेक प्रतिभाएँ गरीबी में उपजती हैं, हमें उनकी सहायता करनी चाहिए। उन्होंने कहा– ''बिटिया! यह पदक तुम्हारी पूँजी है। तुम्हारी मजबूरी में इसे हम ले लें, यह बहुत अन्याय होगा। चलो हम तुम्हारे पिताजी को देखते हैं। तुम चिंता मत करो, तुम्हारे पिताजी भी ठीक होंगे और तुम्हारे पदक पर भी तुम्हारा ही अधिकार रहेगा।''

इतना सुना तो मुस्कान प्रसन्न हो गई और चिकित्सक महोदय को साथ लेकर घर पहुँची। उपचार हुआ और अगले दिन उसके पिताजी भी स्वस्थ हो गये।

– कानपुर (उ. प्र.)

पैनी नजर

– राजेश गुजर

पक्षियों के इस झुण्ड में आपको बताना है चिड़िया और कौए कितने हैं?

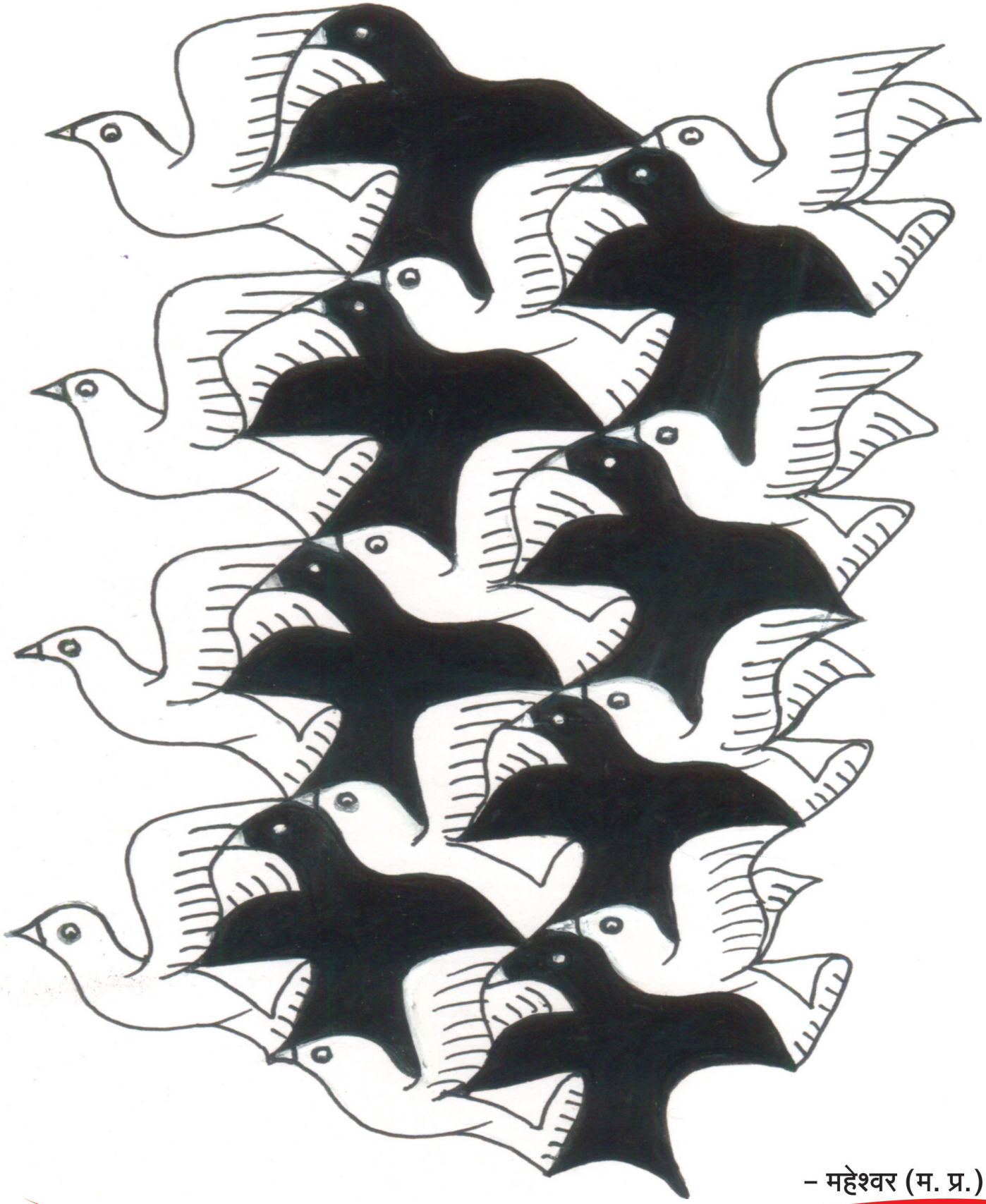

– महेश्वर (म. प्र.)

कविता

यशोदा सी लगती है दादी

बड़े सवेरे जगती है दादी
राम–राम भजती है दादी
कान पकड़कर हमें जगाती
फिर ठंडे पानी से नहलाती
गिलास भरकर दूध है लाती
बिठा गोद में हमें पिलाती
यशोदा–सी लगती है दादी
राम–राम भजती है दादी
करती पूजा आरती माला
सबसे प्रिय वृन्दावन वाला
हमें सुनाती खूब कहानी
एक था राजा एक थी रानी
नजर टी. वी. पर रखती दादी
राम–राम भजती है दादी
दादी हो गई साठ बरस की
शुभ कामनाएँ जन्मदिवस की
छोटी सी दावत हमारे बस की
श्रीखण्ड और आम के रस की
हाथ शीश पर धरती दादी
राम–राम भजती है दादी

– नरेन्द्र मंडलोई 'मांडलिक'
दिगठान (धार) म. प्र.

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२१-२०२३ | आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०४/२०२१ | प्रेषण तिथि ३०/०४/२०२१ | प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

संस्कार संजोना अच्छी बात है
संस्कार फैलाना और अच्छी बात।

वार्षिक शुल्क
180/-

आजीवन शुल्क
1400/-

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक
देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

अब और आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : **www.devputra.com**

देवपुत्र अब ***Jio Net*** पर भी !

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना